युक्रांद

शिकायत व्यर्थ है

मैं चमकीले पत्थरों की खोज करता था ।
वे मुझे मिले ।
मैं रंगीन तितलियों की खोज करता था ।
वे मुझे मिलीं ।
मैंने हीरे खोजे और पाया कि उनके खजानों से पृथ्वी भारी है ।
मैंने दुख खोजे और दुख आ गये ।
मैंने सुख खोजे और सुख मेरे मेहमान बने ।
सफलता को पुकारा और वह द्वार पर खड़ी थी ।
असफलता का विचार भी उठा तो वह निकट ही मौजूद थी ।
ऐसा मेरा जन्मों-जन्मों का अनुभव है ।
और तब मैंने जाना कि जगत् में सब कुछ है ।
और आदमी जो खोजता है, वह उसे मिल जाता है ।
और तब मैंने यह भी जाना कि आदमी को जो भी मिलता है, वह स्वयं इसे चाहे जाने या न जाने वह उसकी स्वयं की ही खोज होती है ।
और जो नहीं मिलता है, वह उसका स्वयं का ही इंकार होता है ।
विचार वस्तुयें हैं (Thoughts are Things)
विचार ही सघन होकर घटनायें बन जाते हैं ।
इसलिए, शिकायत व्यर्थ है ।
शिकायत का कोई उपाय ही नहीं है ।
नर्क भी हमारा ही सृजन है, और स्वर्ग भी ।

(आचार्य श्री की एक चर्चा से)

(संकलन : क्रांति)

क्योंकि मैं अभी भी जीवित हूं

●

आप पूछते हैं कि मेरी कुछ बातें असंगत (Inconsistent) क्यों मालुम पड़ती हैं ? मेरे अतीत–वक्तव्यों में और आज की बातों में अनेक बार भेद क्यों पड़ जाता है ?

ऐसा होगा ही क्योंकि मैं अभी भी जीवित हूं ।

पूर्ण संगति (Absolute Consistency) खोजने के लिए आपको मेरे मरने तक ठहरना ही होगा !

वैसे कुछ लोग जीते-जी ही संगत हो जाते हैं ।

क्योंकि, ऐसे लोगों के मरने और दफनाये जाने के समय में अक्सर वर्षों का फासला होता है !

निश्चय ही अधिक लोग बीस वर्ष के आसपास मर जाते हैं, यद्यपि दफनाये वे जाते हैं सत्तर वर्ष के आसपास !

गत्यात्मक जीवन को तो निरंतर पुरानी संगति से ऊपर उठना होता है ।

नई संगति की खोज में ।

इसलिए, जीवन सदा ही असंगत है ।

और यही शुभ भी है ।

सुन्दर भी ।

सत्य भी ।

अच्छा होगा कि मैं एक कहानी कहूं ।

बहुत समय पूर्व किसी देश में एक अद्भुत आदमी था ।

लेकिन, शायद 'बहुत समय पूर्व' कहना ठीक नहीं है, क्योंकि वह आदमी अभी भी मौजूद है !

और शायद 'किसी देश में' कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि वह आदमी सभी देशों को ही सुशोभित करता है!

और शायद उसे 'अद्भुत' कहता तो गलत ही है क्योंकि अधिकतम आदमी उस जैसे ही हैं !

फिर भी उसकी कहानी कहने जैसी है ।

उस आदमी को संगत (Consistent) होने का रोग था ।

उस आदमी ने बचपन में सुना था कि समय सपत्ति है (Time is Money) ।

और यह उसका सिद्धांत बन गया था ।

इसलिए बाद में वह जितना धन कमाता था, उसमें से एक तिहाई उपयोग में लाता था, और दो–तिहाई कचरे में फेंक देता था ।

जैसे यदि वह तीस रुपये कमाता तो दस का उपयोग करता और बीस फेंक देता ।

निश्चय ही उसकी जिंदगी उसके अपने ही हाथों कठिनाई में पड़ गई थी !

लेकिन, वह अपने सिद्धांत पर अटल था ।

लोग उसकी इस बेबूझ जीवन–व्यवस्था पर बड़े हैरान थे ।

लेकिन, वह उनकी हैरानी पर हंसता था ।

वही हंसी जो कि ज्ञानी अज्ञानियों पर हंसते हैं !

वह लोगों के प्रश्नों का उत्तर भी नहीं देता था; क्योंकि अज्ञानी-जन उसकी बात को समझ भी सकेंगे इसका उसे विश्वास न था।

पर अंततः उत्तार के लिये बहुत जोर डाला जाने पर उसने कहा था "मैं जीवन में सदा संगत होने के सिद्धांत को मानता हूं। असंगति से मुझे घृणा है।"

लेकिन इतने से लोग नहीं समझे तो उसे फिर पूरी बात ही उन नासमझों को बतानी पड़ी थी।

उसने कहा था : "क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है कि समय धन है ?"

लेकिन लोग फिर भी नहीं समझे तो वह क्रोध में आकर बोला था : 'पागलो ! जब समय धन है तो मैं धन के साथ भी वही व्यवहार करने को आबद्ध हूं, जो कि मैं समय के साथ कर रहा हूं। जब मैं अपने समय का दो-तिहाई व्यर्थ खो रहा हूं अर्थात् बिना धन कमाये खो रहा हूं तो मैं अपने पूरे धन का उपयोग कैसे कर सकता हूं ?"

[आचार्य श्री की एक चर्चा से]

(संकलन : क्रांति)

जीवन है : अभी और यहीं

एक अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति को मैंने उस नदी को पार करते देखा जो कि ज्ञात और अज्ञात की सीमा रेखा बनाती है।

वह नाव पर सवार हो गया था और नाव उस तट से छूटने को ही थी जिसका कि नाम जीवन है।

मैंने उससे एक क्षण ठहरने का निवेदन किया और एक छोटे से प्रश्न का उत्तार देने की प्रार्थना की।

लेकिन शायद, ठहरना उसके हाथ में नहीं था और हवाओं ने नाव को उस तट की ओर बहाना शुरू कर दिया था जिसका कि नाम मृत्यु है।

फिर भी मैंने उससे पूछा : "जीवन से विदा होने के इस क्षण में क्या तुम्हारे मन में कोई पश्चाताप है ?"

उसने कहा : "हां—एक ही पश्चाताप कि जब मैं जीवित था, तब मैं जीवन से अपरिचित था। मैं जिया तो जरूर फिर भी जी नहीं पाया। जीवन आया और गया लेकिन मेरे हाथ खाली के खाली रह गये हैं।"

फिर हवायें तेज हो गईं थीं और नाव तेजी से दूर हट रही थी।

उस बूढ़े ने और क्या कहा, वह सुनना संभव नहीं था।

लेकिन, उसके उठे दोनों हाथ खाली जरूर देरतक दिखाई पड़ते रहे थे।

वे मुझे आज तक भी दिखाई पड़ रहे हैं।

और मैं चाहता हूं कि वे समय रहते सभी को दिखाई पड़ सकें।

जीवन को जानना है, जीना हैं, तो जागो।

जागकर जियो।

और अभी और यहीं (Here and Now)।

क्योंकि, कल मृत्यु तो है, लेकिन जीवन नहीं है।

जीवन तो सदा आज ही है।

(आचार्य श्री की एक चर्चा से)

(संकलन : क्रांति)

ध्यान : एक नये आयाम की खोज

कुण्डलिनी, शक्तिपात व प्रभु-प्रसाद

(नारगोल साधना शिविर में ध्यान का अन्तिम प्रयोग)

संकलन : योगाचार्य स्वामी क्रियानन्द, बम्बई ।

मेरे प्रिय आत्मन् ! बहुत आशा और संकल्प से भर कर आज का प्रयोग करें । जानें कि होगा ही । जैसे सूर्य निकला है ऐसे ही भीतर भी प्रकाश फैलेगा । जैसे सुबह फूल खिले हैं ऐसे ही आनन्द के फूल भीतर भी खिलेंगे । पूरी आशा से जो चलता है वह पहुंच जाता है और जो पूरी प्यास से पुकारता है उसे मिल जाता है । जो मित्र खड़े हो सकते हों वे खड़े होकर ही प्रयोग को करेंगे । जो मित्र खड़े हैं उनके आसपास जो लोग बैठे हैं वे थोड़ा हट जायेंगे ताकि कोई गिरे तो किसी के ऊपर न गिर जाय, खड़े होने पर बहुत जोर से क्रिया होती है । पूरा शरीर नाचने लगेगा, आनंदमग्न होकर इसलिए पास कोई बैठा हो वह हट जाय । जो मित्र खड़े हुए हैं उनके आस पास थोड़ी जगह छोड़ दें, शीघ्रता से और पूरा साहस करना है, जरा भी अपने भीतर कोई कमी नहीं छोड़नी है ।

आंख बन्द कर लें······गहरी श्वास लेना शुरू करें । गहरी श्वास लें और गहरी श्वास छोड़ें······ और भीतर देखते रहें । श्वास आई, श्वास गई । गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें (प्रयोग शुरू करते ही चारों तरफ अनेक स्त्री और पुरुष साधक रोने, चिल्लाने और चीखने लगे । बहुत लोगों का शरीर कपने लगा और अनेक तरह की क्रियाएं होने लगी)······गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें, ······(३ बार)······ शक्ति पूरी लगायें । दस मिनिट के लिए गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें······(बहुत से साधक अनेक तरह से नाचने कूदने, उछलने, रोने चीखने और चिल्लाने लगे, साथ ही उनके मुंह से अनेक प्रकार की आवाजें निकलने लगीं, ······कुछ लोग हुंकारने लगे,······'हूं ऊँ' की लम्बी आवाजें,·········आ······SSSSSSSS की तीव्र आवाजें निकलने लगीं········· ।

आचार्य श्री का सुझाव देना चलता रहा······ गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें, गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें·········पूरी शक्ति लगायें········· गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें और भीतर देखते रहें········· (······चीत्कार······चीख······इत्यादि) ······गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें······गहरी श्वास लें, गहरी श्वास छोड़ें और भीतर देखते रहें—श्वास आ रही, श्वास जा रही,······शक्ति पूरी लगा लें······और गहरी, और गहरी, और गहरी······श्वास में पूरी शक्ति लगा दें । एक १० मिनिट पूरी शक्ति लगा दें गहरी श्वास······गहरी श्वास······गहरी श्वास । ······(कुछ लोगों का हंसना, अट्टहास करना)···गहरी श्वास, गहरी श्वास, गहरी श्वास···(लोगों का चीखना, चिल्लाना······) गहरी श्वास···गहरी श्वास, गहरी श्वास······भीतर देखते रहें,—श्वास आई, श्वास गई··· पूरी शक्ति लगा दें । कुछ भी बचायें नहीं, शक्ति पूरी लगा दें । गहरी श्वास, गहरी श्वास (४ बार)······ शरीर ऊर्जा का एक पुंज मात्र रह जायेगा, श्वास ही श्वास

रह जाएगी । शरीर एक विद्युत बन जायेगा । गहरी श्वास···(रोना, चीखना इत्यादि,··· एक व्यक्ति का जोर से चिल्लाना— बोल रजनीश !)

आचार्यश्री का कहना जारी रहा—गहरी श्वास, गहरी श्वास··· (५बार)···कोई पीछे न रहे पूरी शक्ति लगादें । गहरी श्वास···गहरी श्वास ··(साधकों का हंसना, बड़बड़ाना, हूंकार करना, चीखना, नाचना, कूदना··· ५ मिनट बचे हैं, पूरी शक्ति लगायें । फिर हम दूसरे सूत्र में प्रवेश करेंगे···गहरी श्वास···(६ बार)···(बीच-बीच में अनेक साधकों का चीखना, चिल्लाना, उछलना और मुँह से अनेक तरह की आवाजें निकालना···आSSSSSSS आSSSSS)···शरीर सिर्फ एक यंत्र मात्र रह जाय, श्वास लेने का एक यंत्र मात्र रह जाय··· सिर्फ श्वास ही रह जायें···गहरी श्वास, गहरी श्वास··· (४ बार)···(एक साधक का तीव्रतम आवाज में चीखना···) पूरी शक्ति लगा दें···गहरी श्वास···गहरी श्वास, गहरी श्वास···सिर्फ श्वास ही रह गई है, सिर्फ श्वास ही रह गई है···कमजोरी न करें, रूकें न, ताकत पूरी लगा दें··· ··कुछ बचाएं न, ताकत पूरी लगा दें ·· (अनेक तरह की चीखने और चीत्कार की आवाजें···) पूरी शक्ति लगा दें, पूरी शक्ति लगा दें ···(४ बार)··· (साधकों का मुंह से तीव्र आवाजें निकालना और हांफना····चिल्लाना, उछलना, कूदना)···

आचार्यश्री कहते रहे—पूरी शक्ति लगा दें । पीछे न रुकें, यह पूरा वातावरण चार्ज्ड हो जाएगा । शक्ति पूरी लगा दें···घटना घटेगी ही । शक्ति पूरी लगा दें··· गहरी श्वास···और गहरी श्वास···और गहरी श्वास ··· (५ बार)····(बीच-बीच में कुछ लोगों का रोना, चीखना····,शरीर व श्वास की अनेक प्रक्रियायें लगातार चलती ही रहीं...) शक्ति पूरी लगाएं···देखें, रुकें न । मैं आपके पास ही आकर कह रहा हूं—शक्ति पूरी लगा दें । पीछे कहने को न हो कि नहीं हुआ । पूरी शक्ति लगायें···(४ बार)···गहरी श्वास, और गहरी और गहरी । **जितनी गहरी श्वास होगी सोई हुई शक्ति के जगने में उतनी ही सहायता मिलेगी····कुंडलिनी ऊपर की ओर उठने लगेगी ।** गहरी श्वास लें...गहरी श्वास लें····(४ बार)···· (कुछ लोगों का जोर से रोना, चीखना···)कुण्डलिनी ऊपर की ओर उठनी शुरू होगी, गहरी स्वास लें । शक्ति ऊपर उठने लगेगी, गहरी स्वास लें···· (एक साधक का तीव्रतम आवाज में चीत्कार करना—क्वा SSSSSS क्वा SSSSSS -····, चारों ओर सैकड़ों साधक अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं में संलग्न हैं, किसी को योगासन हो रहे हैं, किसी को अनेक प्रकार प्राणायाम हो रहे हैं, किसी को अनेक मुद्राएं हो रही हैं, कई हंस रहे हैं, कई रो रहे हैं । चारों ओर एक अजीब सा दृष्य उपस्थित हो गया है । आचार्यश्री कुछदेर चुप रहकर फिर साधकों को प्रोत्साहन देने लगते हैं ।)

दो मिनट बचे हैं, पूरी ताकत लगायें···गहरी स्वास, गहरी स्वास, गहरी स्वास····कुण्डलिनी ऊपर उठने लगेगी····गहरी स्वास ले··· (४ बार)जितनी गहरी ले सकें लें । दो मिनट बचे हैं । पूरी ताकत लगायें । फिर हम दूसरे सूत्र में प्रवेश करेंगे···गहरी स्वास···गहरी स्वास—गहरी स्वास···भीतर कुछ उठ रहा है, उसे उठने दें···(कुछ साधकों का चीखना, मुंह से अनेक तरह की आवाजें निकालना और नाचना) ····१ मिनट बचा है, पूरी शक्ति लगायें । फिर हम दूसरे सूत्र में जायेंगे···गहरी स्वास··· ताकत पूरी लगा दें— (३ बार)···भीतर शक्ति उठ रही है । छोड़ें नहीं अपने को । ताकत पूरी लगा दें··· गहरी, और गहरी, और गहरी, और गहरी···कूद पड़ें, पूरी ताकत लगा दें···सारी शक्ति लगा दें··· गहरी गहरी, गहरी, गहरी स्वास, गहरी स्वास, गहरी स्वास··· **श्वास की चोट होने दें भीतर, सोई हुई शक्ति उठेगी····** गहरी स्वास····(५ बार) अब दूसरे सूत्र में जाना है गहरी स्वास, और गहरी, और गहरी । आपसे ही कह रहा हूं । पूरी ताकत लगा दें । गहरी स्वास, और गहरी··· (५ बार) । दूसरे सूत्र में प्रवेश कर जायें ।

श्वास गहरी रहेगी, शरीर को छोड़ दें, शरीर को जो भी होता है, होने दें । शरीर रोये, रोने दें । हंसे,

हंसने दें। चिल्लाये, चिल्लाने दें । शरीर नाचने लगे, नाचने दें। शरीर को जो होता है, होने दें । शरीर को छोड़ दें अब। शरीर को जो होता है, होने दें·· (अनेक तरह की आवाजें मुंह से निकलना और शरीर की प्रतिक्रियाओं, विविध गतियों में तीव्रता का आना)···शरीर को छोड़ दें बिलकुल । जो होता है होने दें। शरीर के अंगों में जो होता है, होने दें···शरीर को छोड़ दें··· १० मिनट के लिए शरीर में जो होता है, होने दें···· (शरीर की गतियां और चीखना चिल्लाना···चलता रहा···और आचार्य श्री कहते रहे)—शरीर को छोड़ दें, पूरी तरह छोड़ दें···शरीर नाचेगा, कूदेगा, छोड़ दें··· भीतरी शक्ति उठेगी तो शरीर नाचेगा, कूदेगा ·· छोड़ दें: शरीर को बिलकुल छोड़ दें। जो होता है, होने दें··· (कुछ लोग अट्टहास कर रहे हैं, कुछ अंगों को पीट रहे हैं, कई रो रहे हैं, कई हंस व नाच रहे हैं,···एक महिला तीव्र आवाज से चीत्कार व रुदन करने लगती है,··· कईयों के मुंह से विचित्र आवाजें निकल रही हैं,···एक व्यक्ति का तीव्रता से चिल्लाना—आSSSSSआSSSS···)

सुझाव चलता रहा—शरीर को छोड़ दें···श्वांस गहरी रहे, शरीर को छोड़ दें। भीतरी शक्ति जागेगी··· शरीर नाचने लगेगा, कूंदने लगेगा, कंपने लगेगा··· जो भी होता है, होने दें···शरीर लौटने लगे, चीखने लगे, हंसने लगे—छोड़ दें······शरीर को पूरी तरह छोड़ दें ताकि अलग दिखाई पड़ने लगे मैं अलग हूं शरीर अलग है। शरीर को छोड़ें, शरीर को छोड़ें, शरीर को बिलकुल छोड़ दें··· छोड़ें, शरीर को छोड़ दें। शरीर एक विद्युत यंत्र भर रह गया है। शरीर नाच रहा है, शरीर कूद रहा है, शरीर कंप रहा है···शरीर को छोड़ दें, शरीर रो रहा है, शरीर हंस रहा है— शरीर को छोड़ दें। आप शरीर से अलग हैं । शरीर को छोड़ दें। शरीर को जो होता है, होने दें··· (आवाजें—चीखें···रुदन···हिचकियां)···छोड़ें, छोड़ें··शरीर को बिलकुल छोड़ दें। रोकें नहीं। कुछ मित्र रोक रहे हैं। रोकें नहीं, छोड़ दें। जरा भी न रोकें, जो होता है होने दें···(किसी का तीव्र रुदन)···शरीर को बिलकुल थका डालना है, सहयोग करें। शरीर को छोड़ दें सहयोग करें। जो होता है, होने दें···शरीर को थका डालना है··· छोड़ दें। बिलकुल छोड़ दें। जो होता है, होने दें··· (अनेक तरह की आवाजें···चीखना–चिल्लाना, फूट फूट कर रोना)···छोड़ें, छोड़ें, रोकें नहीं। देखें, कोई रोके नहीं, छोड़ दें, बिलकुल छोड़ दें। शरीर को जो होता है होने दें···(चीख—आSSSSS)···होने दें···छोड़ दें··· छोड़ दें·· चारों तरफ अनेक तरह की धीमी और तीव्र आवाजों का संयोग एक शोर–गुल सा पैदा कर रहा है··· सुझाव चलता रहा)।

५ मिनट बचे हैं शरीर को पूरी तरह छोड़ दें। सहयोग करें···शरीर को जो हो रहा है उसमें कोआपरेट करें। शरीर जो कर रहा है, उसे करने दें। रोना है है रोयें, हंसना है हंसे—रोके नहीं···शरीर नाचने लगेगा, नाचने दें। शरीर उछलने लगे, उछलने दें।···अनेक तीव्र आवाजें, कराहना, चीखना, चिल्लाना, रोना, हंसना, भागना-दौड़ना)···छोड़ें, पूरी तरह छोड़ें सहयोग करें ··भीतर शक्ति उठ रही है, उसे छोड़ दें··· पांच मिनट बचे हैं, पूरी तरह छोड़ें। शरीर को पूरी तरह छोड़ें···(कई चीखें, चीत्कार और शरीर की तीव्र प्रतिक्रिया···अचानक माइक काम करना बंदकर देता है। व्यवस्था करने वाले व्यक्ति सब ध्यान में हैं । लाउडस्पीकर का आपरेटर भी ध्यान में नाच कूद रहा है। कुछ देर बाद उसे किसी के द्वारा झकझोर कर सामान्य अवस्था में लाया गया, शांत किया गया। तब उसने माइक की खराबी खोजनी शुरू की···आचार्य श्री बिना माइक के ही बोलते रहे ।

छोड़ें, पूरी तरह छोड़ दें। शरीर को जो हो रहा है पूरी तरह होने दें···(अनेक आवाजें···अट्टहास···रुदन··· चीखें)···पूरी शक्ति से छोड़ें। छोड़ें, दो मिनट बचे हैं। शरीर को पूरी तरह छोड़ दें···शरीर अलग है आप अलग हैं। शरीर को जो होना है, होने दें···आप अलग हैं··· २ मिनट के लिए पूरी तरह छोड़ें फिर हम दूसरे सूत्र के लिए चलेंगे···छोड़ें, छोड़ें, बिलकुल छोड़ दें ।···शरीर को

थका डालें। छोड़ें, छोड़ें, छोड़ें···गहरी श्वास लें। शरीर को छोड़ दें···शरीर नाचता है, नाचने दें···तीसरे सूत्र में चलने के पहले पूरी शक्ति लगा दें···शरीर को छोड़ें, छोड़ें। एक मिनट बचा है। पूरी तरह छोड़ें ।···पूरी तरह छोड़ें, पूरी तरह छोड़ें···(एक साधक का तीव्रता से चिल्लाना···आSSSSSSSS)···जो होता है, होने दें··एक मिनट बचा है, पूरी तरह छोड़ें···पूरी तरह छोड़ दें, जो होता है होने दें। एक मिनट के लिए सब छोड़ दें,······
···(लम्बी रेंकने की सी आवाज···रुदन···अट्टहास··· हंसी)···छोड़ें, बिलकुल छोड़ दें। शरीर को बिलकुल नाचने दें, छोड़ दें,···चिल्लाने दें, रोने दें, हंसने दें, छोड़ दें···शरीर जा कर रहा है, करने दें···साफ दिखाई पड़ेगा आप अलग हैं शरीर अलग है। पूरी तरह छोड़ें, फिर तीसरे सूत्र में प्रवेश करेंगे···छोड़ें, छोड़ें···सहयोग करें। शरीर को छोड़ दें और अब तीसरे सूत्र मे प्रवेश कर जायें।

भीतर पूछें मैं कौन हूं, मैं कौन हूं, मैं कौन हूं··· (६ बार)। १० मिनट तक शरीर नाचता रहे, श्वास गहरी रहे और भीतर पूछें मैं कौन हूं···(३ बार)······ (लोगों का अनेक क्रियाओं को करते हुए रोना, चिल्लाना···कराहना···हिचकियां लेना···हांफना···एक साधक का जोर से लगातार चिल्लाना-कौन हूं, कौन हूं, कौन हूं···आचार्य श्री कहते रहे)—मैं कौन हूं, मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···पूरी ताकत लगा दें। मैं कौन हूं मैं कौन हूं···(अनेक तरह की आवाजें लोगों के मुंह से निकलना···हिचकियों के साथ रोना···चिल्लाना··· नाचना······एक व्यक्ति का असाधारण तीव्रता से चिल्लाना– क्वा SSSSS क्वा SSSSS क्वा SSSSS)···मैं कौन हूं···मैं कौन हूं···(८ बार कहा जाना)······ (आवाजें···चिंघाड़ना···अट्टहास करना···मैं कौन हूं··· (६ बार)···(एक साधक का कराह पूर्वक चिल्लाना— आ SSSS आ SSSSS आ SSSSS)······

आचार्य श्री कहते रहे—मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···(७ बार)···(एक साधक का बोल उठना—मैं कौन हूं···४ बार)···पूरी ताकत से पूछें—मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···(५ बार)···रोना, चीखना, तड़फना, नाचना आदि मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···की अनेकों आवाजें साधकों के मुंह से बाहर निकलना···सुझाव चलता रहा) मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···(७ बार) ।···शक्ति पूरी लगा दें, शक्ति पूरी लगा दें···मैं कौन हूं··· (४ आवृत्ति) ।··· शक्ति पूरी लगायें···मैं कौन हूं···(अनेक लोगों की चीत्कार···चिंघाड़···पछाड़ खाकर रोना···गिरना···रेत पर लोटना···उछलना, कूदना)······मैं कौन हूं··· (६ आवृत्ति)। (एक व्यक्ति की कराह के साथ आवाज आ SSS अSSS) मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···५ मिनट बचे हैं, पूरी शक्ति लगायें। फिर हम विश्राम करेंगे···शरीर को छोड़ दें···· और भीतर पूछते रहें–मैं कौन हूं··· मैं कौन हूं···पूरी शक्ति लगायें, पूरी शक्ति लगायें··· (एक लम्बी चीत्कार···और अनेकों का रोना, चीखना. चिल्लाना)···मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···पूरी ताकत लगायें, पूरी ताकत लगायें···मैं कौन हूं, मैं कौन हूं···३ मिनट बचे हैं फिर हम विश्राम करेंगे···अपने को थका डालें··· भीतर शक्ति उठ रही है···(रोना, चीखना, उछलना, कूदना, भागना—दौड़ना)···

सुझाव चलता रहा—मैं कौन हूं···(४आवृत्ति) शक्ति पूरी लगायें···मैं कौन हूं···३ मिनट बचे हैं, शक्ति पूरी लगायें···मैं कौन हूं··· (३ आवृत्ति)··· (शरीर की क्रियायें······शोरगुल ······आवाजें······एक तीव्र आवाज क्वा SSSS क्वा SSSSS)···मैं कौन हूं···की चार आवृत्ति। आखिरी २ मिनट बचे हैं, शक्ति पूरी लगायें ··फिर हम विश्राम करेंगे···मैं कौन हूं··· (२ बार) शक्ति भीतर जाग रही है। शरीर को नाच जाने दें छोड़ दें···मैं कौन हूं···मैं कौन हूं··· (आSSSS आ SSSS की आवाजें)···मैं कौन हूं ··· मैं कौन हूं···शक्ति भीतर पूरी जग जाने दें। मैं कौन हूं··· (५ आवृत्ति)···बिलकुल पागल हो जायें ।······ मैं कौन हूं···मैं कौन हूं···(एक व्यक्ति का जोर से चिल्लाना—क्वा SSSSS क्वाSSSS, क्वा SSSS क्वा SSSSS)···मैं कौन हूं, मैं कौन हूं··· थका डालें अपने को, फिर विश्राम करना है··मैं कौन

हूं…(३ आवृत्ति) …एक मिनट और—मैं कौन हूं। …शरीर नाचता है, नाच जाने दें…(तीव्र चीत्कार, रूदन)…मैं कौन हूं, मैं कौन हूं…(साधकों की तीव्रतम गतियां)…मैं कौन हूं…मैं कौन हूं…विश्राम में जाना है पूरी ताकत लगा दें…आखरी क्षण में पूरी ताकत लगा दें…मैं कौन हूं…(४ बार)…अवसर न खोएं। पूरी ताकत लगा दें…मैं कौन हूं…की ५ आवृत्ति…आखिरी ताकत, फिर विश्राम में जाना है…मैं कौन हूं, मैं कौन हूं…(८ बार)।

बस। बस, छोड़ दें। छोड़ दें—पूछना छोड़ दें, श्वांस लेना छोड़ दें। जो जहां पड़ा है, पड़ा रह जाय। जो जहां खड़ा है,खड़ा रह जाय। गिरना हो गिर जायें… लेटना हो लेट जायें, बैठना हो बैठे रहें…सब शांत, सब शून्य हो जाने दें…न कुछ पूछें न कुछ करें। बस पड़े रह जायें, जैसे मर गए, जैसे हैं ही नहीं…तूफान चला गया, भीतर शांति छूट गई……सब मिट गया। सब शांत हो गया। तूफान गया….पड़े रह जायं, १०मिनट बिलकुल पड़े रह जायें…इस शांति में, इस शून्य में ही उसका आगमन होता है, जिसकी खोज है…पड़े रह जायं… न श्वांस जोर से लेनी है, न प्रश्न पूछना है, न कुछ करना है। सब कुछ बिलकुल छोड़ दें। खड़े हों खड़े रह जायं, गिर गए हों गिरे रह जायें, पड़े हैं पड़े रह जायं। १० मिनट के लिए मर जायं…हैं ही नहीं…तूफान गया। सब शांत हो गया है। सब मौन हो गया है।… (चारों ओर सब साधक शांत और स्थिर हो गए हैं। बीच-बीच में कोई कराह उठता है, कोई हिचकियां लेने लगता है, कोई सुबकने लगता है और फिर शांत व चुप हो जाता है)…

आचार्य श्री कहते रहते हैं— ‘इस शून्य में ही कुछ घटित होगा, कोई फूल खिलेंगे, कोई प्रकाश फैल जाएगा…कोई शांति की धारा फूट पड़ेगी…कोई आनंद का संगीत सुनाई पड़ता है। इस शून्य में ही प्रभु का आना होगा। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें…पड़े रह जायें, पड़ें रह जायें। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें। बस प्रतीक्षा करें। सब थक गया…सब शून्य हो गया)… कराहने की कुछ आवाजें)…प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें…अब मैं चुप हो जाता हूं। १० मिनट चुपचाप पड़े रह जायें…’ (पक्षियों की सुरीली आवाजें…किसी का हिलना, डुलना, किसी का सुबकना, श्वास लेना…एक साधक का जोर से चिल्लाना—‘प्रभु SSSS मने माफ कर…प्रत्येक गुनाह बदल मने शिक्षा कर …हे प्रभु’ … किसी किसी का हूंSSSS हूं SSSS हूं SSSS करना कराहने की आवाजें… एक व्यक्ति का जोरों से चीखना—पा SSSSS पी SSSSS …कुछ देर बाद दूर कोने से एक साधक के मुंह से आवाज निकलती है, ‘कौन कहता है पापी हूं ?’…पुन: किसी का कराहना…ऊं ऊं…ऊं…करना…कौवो का कांव-कांव करना…सरूवन में हवा की सरसराहट… सागर का गर्जन,… सब तरफ सन्नाटा, जैसे सरूवन बिलकुल निर्जन हो…एक महिला का रोना, हिचकियां लेना…)।

…जैसे मर ही गए। जैसे मिट ही गए। शून्य मात्र रह गया। सब मिट गया। सब शांत हो गया। सब मौन रह गया। इस मौन में ही उसका आगमन है (एक महिला का रो उठना) इस शून्य में ही उसका द्वार है। प्रतीक्षा करें प्रतीक्षा करें…एक महिला का सुबक-सुबक कर रोना…एक व्यक्ति हूं…हूं…हूं…की आवाज करना…दूर कोने से एक साधक का तीव्रता से प्राणायाम (स्वास लेना छोड़ना) करना…कुछ लोगों का कराहना…फुसफुसाना… एक व्यक्ति का पुन: चीख उठना—पा SSSS पी SSSS…किसी का बड़बड़ाना… माइक अब सुधर पाया…माइक पर आचार्यश्री बोलते हैं): जैसे मर ही गए। जैसे मिट ही गए। तूफान गया, शांति छूट गई। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें…

इसी क्षण में कुछ घटित होता है। मौन प्रतीक्षा करें…सब शून्य हो गया। प्रतीक्षा करें…(३ आवृत्ति) …जैसे मर ही गए, लेकिन भीतर कोई जागा हुआ है। सब शून्य हो गया है, लेकिन भीतर कोई ज्योति जागी हुई है…जो जानती है, देखती है, पहचानती है।

आप तो मिट गए, लेकिन कोई और जागा हुआ है··· भीतर सब प्रकाश हो गया है। भीतर आनंद की धारा बहने लगी है। परमात्मा बहुत निकट है। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें···(एक व्यक्ति का फुसफुसाना—पापीचारा, पापीचारा···एक साधक का सोए-सोए ही कह उठना—यह साधना चालू रखें, यह साधना चालू रखें···कहीं से दोनों हथेलियों को तेजी से पीटने की आवाज—पट, पट, पट···एक साधक की तीव्र चीत्कार—बचा SSSS ओ SSSS)···जैसे मर गए। जैसे मिट गए। जैसे बूंद सागर में गिर कर खो गई हो, ऐसेखो जायें··· प्रतीक्षा करें···

इस खो जाने में ही उसका मिल जाना है, प्रतीक्षा करें। भीतर शांत मौन प्रकाश फैल गया है। भीतर एक गहरा आनंद झलकना शुरू होगा···गहरा आनंद उठना शुरू होगा···भीतर आनद की धारा बहने लगेगी··· प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें···(प्रभु, प्रभु, हे प्रभु···की आवाज)···भीतर आनंद बहने लगेगा। भीतर प्रकाश उतरने लगेगा· प्रतीक्षा, प्रतीक्षा, प्रतीक्षा···जैसे मर ही गये, जैसे मिट ही गये, सब शून्य हो गया···

इसी शून्य में उसका दर्शन है। इसी शून्य में उसकी झलक है। इसी शून्य में उसकी उपलब्धि है। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें···· देखें भीतर कोई प्रवेश कर रहा है···देखें, भीतर कोई जाग गया है। देखें, भीतर कोई आनंद प्रगट हो गया है। आनंद जो कभी नहीं जाना, आनंद जो अपरिचित है, आनंद जो अज्ञात है। प्राण के कोर कोर में कुछ भर गया है। प्रतीक्षा करें······(पक्षियों की आवाजें···सरू वृक्षों की सरसराहट······सब शांत है)······आनन्द ही आनन्द शेष रह जाता है। प्रकाश ही प्रकाश शेष रह जाता है। शांति ही शांति शेष रह जाती है। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें, इन्हीं मौन क्षणों में आगमन है उसका। इन्हीं मौन क्षणों में मिलन है उससे। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें··· (एक साधक का तीव्र श्वास प्रस्वास लेना···एक व्यक्ति का कराहना)···जिसकी खोज है, वह बहुत पास है। जिसकी तलाश है वह इस समय बहुत निकट है। प्रतीक्षा करें, प्रतीक्षा करें।

अब धीरे धीरे आनन्द के इस जगत से वापस लौट आयें। धीरे धीरे प्रकाश के इस जगत से वापस लौट आयें। धीरे धीरे भीतर के इस जगत से वापस लौट आयें। बहुत आहिस्ता आहिस्ता आँख खोलें, आंख न खुलती हो तो दोनों हाथ आंख पर रख लें। फिर धीरे धीरे खोलें। जल्दी कोई भी न करें। जो गिर गए हैं और न उठ सकें वे दो चार गहरी स्वास लें, फिर आहिस्ता आहिस्ता उठें। बिना बोले, बिना आवाज किए चुपचाप उठ आयें। जो खड़े हैं वे चुपचाप बैठ जायें। धीरे धीरे आंख खोल लें। वापस लौट आयें··· (एक महिला का हिचकी ले लेकर रोना)··· हमारी सुबह की बैठक समाप्त हुई।

⁂

ध्यान है जागना–देखना–साक्षित्व।
यह क्रिया नहीं है।
यह समस्त क्रियाओं का विश्राम है।
इसलिए, ध्यान मन के पार है।

ध्यान : एक नये आयाम की खोज | २

कुण्डलिनी, शक्तिपात व प्रभु-प्रसाद

संकलन : योगाचार्य स्वामी क्रियानन्द, बम्बई।

(नारगोल साधना शिविर के बाद उपरोक्त विषय पर एक प्रश्नोत्तर चर्चा आचार्य श्री के बम्बई निवास स्थान पर आयोजित की गई थी। जिसमें १ से १२ जुलाई ७० तक लगभग २० घंटे आचार्य श्री ने स्वामी क्रियानन्द द्वारा पूछे गए प्रश्नों का सविस्तार में उत्तर दिया। नारगोल के प्रवचनों के साथ यह सारी चर्चा एक विशाल पुस्तकाकार में 'जिन खोजा तिन पाइयां' शीर्षक से शीघ्र प्रकाशित होने वाली है। इसी संदर्भ में दिनांक १५-६-७० को हुई एक प्रश्नोत्तर चर्चा, एक झलक के रूप में, नीचे प्रस्तुत है। —संपादक)

प्रश्न : तीव्र श्वास प्रस्वास लेना और मैं कौन हूं पूछना इसका कुण्डलिनी जागरण और चक्र-भेदन की प्रक्रिया से किस प्रकार का संबंध है ?

संबंध है और बहुत गहरा सम्बन्ध है। असल में श्वास से ही हमारी आत्मा और शरीर का जोड़ है। श्वास सेतु है। इसलिए श्वास गई कि प्राण गये। मस्तिष्क चला जाय तो चलेगा, आंखें चली जायं तो चलेगा, हाथ पैर कट जायं तो चलेगा। स्वास कट गई कि गये। स्वास से जोड़ है हमारे आत्मा और शरीर का। आत्मा और शरीर के मिलन का जो बिंदु है उसी बिन्दु पर वह शक्ति है जिसको कुण्डलिनी कहते हैं। नाम कुछ भी दिया जा सकता है। वह ऊर्जा वही है। इसलिए उस ऊर्जा के दो रूप हैं। अगर कुण्डलिनी की ऊर्जा शरीर की तरफ बहे तो काम शक्ति बन जाती है, सेक्स बन जाती है। और अगर वह ऊर्जा आत्मा की तरफ बहे तो वह कुण्डलिनी बन जाती है या उसे कोई और नाम दें। शरीर की तरफ बहने से वह अधोगामी हो जाती है और आत्मा की तरफ बहने से वह ऊर्ध्व-गामी हो जाती है। पर जिस जगह वह है उस जगह पर चोट स्वास से पड़ती है। इसलिए तुम हैरान होओगे कि संभोग करते समय स्वास को शांत नहीं रखा जा सकता है। संभोग करते समय स्वास की गति में तत्काल अंतर पड़ जायेगा। कामातुर होते ही चित्त स्वास को तेज कर लेगा। क्योंकि उस बिंदु पर चोट स्वास करेगी तभी वहां से काम-शक्ति बहनी शुरू होगी। स्वास की चोट के बिना संभोग भी असंभव है और श्वास की चोट के बिना समाधि भी असंभव है। समाधि उसके ऊर्ध्वगामी बिन्दु का नाम है और संभोग उसके अधोगामी बिन्दु का नाम है। पर स्वास की चोट तो दोनों पर पड़ेगी।

तो अगर चित्त काम से भरा हो तब श्वास को धीमा करना, श्वास को शिथिल करना। जब चित्त में काम-वासना घेरे, या क्रोध घेरे या और कोई वासना घेरे तब स्वास को शिथिल करना, कम करना और धीमे लेना। तो काम क्रोध दोनों बिदा हो जावेंगे। टिक नहीं सकते हैं। क्योंकि जो ऊर्जा उनको चाहिए वह स्वास के बिना चोट पड़े नहीं मिल सकती। इसलिए कोई आदमी क्रोध नहीं कर सकता है, स्वास को धीमे लेकर। और अगर करे तो वह बिलकुल चमत्कार है, साधारण घटना नहीं है। यह हो नहीं सकता है। स्वास धीमी हुई कि क्रोध गया। कामोत्तेजित भी

नहीं हो सकता कोई स्वास को शांत रखकर । क्योंकि स्वास शांत हुई की कामोत्तेजना गई । तो जब कामोत्तेजित हो मन, क्रोध से भरे मन तब स्वास को धीमे रखना । और जब ध्यान की अभीप्सा से भरे मन तो स्वास की तीव्र चोट करना । क्योंकि जब ध्यान की अभीप्सा हो और स्वास की चोट पड़े तो जो ऊर्जा है वह ध्यान की यात्रा पर निकलनी शुरू हो जाती है ।

कुण्डलिनी पर गहरी श्वास का बहुत परिणाम है । प्राणायाम अकारण ही नहीं खोज लिया गया था । बहुत लम्बे प्रयोगों और अनुभवों से ज्ञात होना शुरू हुआ कि स्वास की चोट से बहुत कुछ किया जा सकता है । स्वास का आघात बहुत कुछ कर सकता है । और यह आघात जितना तीव्र हो उतनी त्वरित गति होगी । और हम सब साधारण जनों में जिनकी कुण्डलिनी जन्मों-जन्मों से सोई हुई है, उसको बड़े तीव्र आघात की जरूरत है । घने आघात की जरूरत है, सारी शक्ति इकट्ठी करके आघात करने की जरूरत है ।

श्वास से तो कुण्डलिनी पर चोट पड़नी शुरू होती है, उसके मूल केन्द्र पर चोट पड़नी शुरू होती है और जैसे जैसे तुम्हें अनुभव होना शुरू होगा तुम बिलकुल आंख बंद करके देख पाओगे कि श्वास की चोट कहां पड़ रही है । इसलिए अक्सर ऐसा हो जायेगा कि जब श्वास की तेज चोट पड़ेगी तो बहुत बार कामोत्तेजना भी हो सकती है । वह इसलिए हो सकती है कि तुम्हारे शरीर का एक ही अनुभव है, स्वास तेज पड़ने का उस ऊर्जा पर चोट पड़ने का एक ही अनुभव है, सेक्स का । तो जो अनुभव है उस लीक पर शरीर फौरन काम करना शुरू कर देगा । इसलिए बहुत साधकों को, साधिकाओं को एकदम तत्काल यौन केन्द्र पर चोट पड़नी शुरू हो जाती है ।

गुरजिएफ के पास अनेक लोगों को ऐसा ख्याल हुआ । अनेक स्त्रियों को ऐसा ख्याल हुआ कि उसके पास जाते ही उनके यौन केन्द्र पर चोट होती है । यह बिलकुल स्वाभाविक है । इसकी वजह से गुरजिएफ को बहुत बदनामी मिली । इसमें उसका कोई कसूर न था । असल में ऐसे व्यक्ति के पास जिसकी अपनी कुण्डलिनी जागृत हो उसकी चारों तरफ की तरंगों से तुम्हारी कुण्डलिनी पर चोट होनी शुरू होती है । लेकिन तुम्हारी कुंडलिनी तो अभी बिलकुल सेक्स सेंटर के पास सोई हुई होती है । इसलिए चोट वहीं पड़ती है, पहली चोट वहीं पड़ती है ।

तीव्र श्वास तो गहरा परिणाम लाने वाली है, कुण्डलिनी के लिए । और सारे केन्द्र जिन्हें तुम चक्र कहते हो, वे सब कुण्डलिनी के यात्रा पथ के स्टेशन हैं । जहां जहां से कुण्डलिनी होकर गुजरेगी वे स्थान हैं, ऐसे तो बहुत स्थान हैं । इसलिए कोई कितने ही चक्र गिन सकता है । लेकिन बहुत मोटे विभाजन करें तो जहां कुण्डलिनी थोड़ी देर ठहरेगी, विश्राम करेगी, वे ७ स्थान हैं । तो सब चक्रों पर परिणाम होगा । और जिस व्यक्ति का जो चक्र सर्वाधिक सक्रिय है उस पर सबसे पहले परिणाम होगा । जैसे कि अगर कोई व्यक्ति मस्तिष्क से ही दिन रात काम करता है तो तेज श्वास के बाद उसका सिर एकदम भारी हो जायेगा । क्योंकि उसका जो मस्तिष्क का चक्र है वह सक्रिय चक्र है । श्वास का पहला आघात सक्रिय चक्र पर पड़ेगा । उसका सिर एकदम भारी हो जायेगा । कामुक व्यक्ति हो तो उसकी कामोत्तेजना बढ़ जायेगी । बहुत प्रेमी व्यक्ति है तो उसका प्रेम बढ़ जायेगा । भावुक व्यक्ति है तो भावना बढ़ जायेगी । उसका जो अपने व्यक्तित्व का केन्द्र बहुत सक्रिय है पहले उस पर चोट होनी शुरू हो जायेगी । लेकिन तत्काल दूसरे केन्द्रों पर भी चोट होनी शुरू होगी । इसलिए व्यक्तित्व में रूपान्तरण भी तत्काल अनुभव होना शुरू हो जायेगा । कि मैं बदल रहा हूं । यह मैं वही आदमी नहीं हूं जो कल तक था । क्योंकि हमें आदमी का पता ही नहीं है कि हम कितने हैं । हमें तो पता है उसी चक्र का जिस पर हम जीते हैं । जब दूसरा चक्र हमारे भीतर खुलता है तो हमें लगता है कि हमारा पहला व्यक्तित्व गया, ये तो हम दूसरे आदमी हुए । या हम अब वह आदमी नहीं हैं जो कल तक थे ।

यह ऐसे ही है जैसे कि इस मकान में हमें इसी कमरे का पता हो, यही नक्शा हो कमरे का हमारे दिमाग में। अचानक एक दरवाजा खुले और एक और कमरा हमें दिखाई पड़े। तो हमारा पूरा नक्शा बदलेगा। अब जिसको हमने अपना मकान समझा था वह दूसरा हो गया। अब एक नई व्यवस्था उसमें हमें देनी पड़ेगी।

तो तुम्हारे जिन-जिन केन्द्रों पर चोट होगी वहां वहां से व्यक्तित्व का नया अविर्भाव होगा। तो जब सारे केन्द्र सक्रिय होते हैं एक साथ, उसका मतलब है कि जब सबके भीतर से ऊर्जा एक सी प्रवाहित होती है तब पहली दफे हम अपने पूरे व्यक्तित्व में जीते हैं। हममें से कोई भी अपने पूरे व्यक्तित्व में साधारणतः नहीं जीता है। और हमारे ऊपर के केन्द्र तो अछूते रह जाते हैं। तो श्वास इन केन्द्रों पर भी चोट करेगी।

और मैं कौन हूं का जो प्रश्न है वह भी चोट करने वाला है। वह दूसरी दिशा से चोट करने वाला है। इसे थोड़ा समझो। श्वास से तो ख्याल में आया। अब 'मैं कौन हूं?' इससे कुंडलिनी पर कैसे चोट होगी? यह कभी हमारे ख्याल में नहीं है कि अगर आंख बंद कर लें और एक नग्न स्त्री का चित्र सोचें तो तुम्हारा सेक्स सेन्टर फौरन सक्रिय हो जायेगा। क्यों? तुम सिर्फ एक कल्पना कर रहे हो तुम्हारा सेक्स सेंटर क्यों सक्रिय हो गया? असल में प्रत्येक सेन्टर की अपनी कल्पना है। सेंटर की अपनी इमेजिनेशन है। और अगर उसकी इमेजिनेशन के करीब की इमेजिनेशन करनी तुमने शुरू की तो वह सेंटर तत्काल सक्रिय हो जायेगा। इसलिये कामवासना का विचार करते ही तुम्हारा सेक्स सेंटर वर्क (काम) करना शुरू कर देगा। और तुम हैरान होओगे, नग्न स्त्री हो सकता है इतना प्रभावी न हो जितना नग्न स्त्री का विचार प्रभावी होगा। उसका कारण है कि नग्न स्त्री का विचार तुम्हें कल्पना में ले जायेगा और कल्पना चोट करेगी। लेकिन नग्न स्त्री तुम्हें कल्पना में नहीं ले जायेगी। वह तो प्रत्यक्ष खड़ी है। इसलिए प्रत्यक्ष जितनी चोट कर सकती है करेगी। कल्पना भीतर से चोट करती है तुम्हारे सेंटर पर, प्रत्यक्ष स्त्री सामने से चोट करती है। सामने की चोट उतनी गहरी नहीं है जितनी भीतर की चोट गहरी है। इसलिए बहुत से ऐसे लोग हैं जो स्त्री के सामने तो नपुंसक इम्पोटेंट सिद्ध होंगे, लेकिन कल्पना में बहुत पोटेंट (पुंसक) हैं। कल्पना में उनकी पोटेंसी (पुंसकत्व) का कोई हिसाब नहीं है, क्योंकि कल्पना की जो चोट है वह तुम्हारे भीतर से जाकर सेंटर को छूती है। प्रत्यक्ष की जो चोट है वह भीतर से जाकर नहीं छूती है, बाहर से तुम्हें सीधा छूती है। और मनुष्य चूंकि मन में जीता है इसलिए मन से ही गहरी चोटें कर पाता है।

तो जब तुम पूछते हो "मैं कौन हूं" तो तुम एक जिज्ञासा कर रहे हो। एक जानने की कल्पना कर रहे हो, एक प्रश्न उठा रहे हो। यह प्रश्न तुम्हारे किस सेंटर को छुएगा? यह प्रश्न तुम्हारे किसी सेंटर को छुएगा ही। जब तुम यह प्रश्न पूछते हो, जब तुम इसकी जिज्ञासा करते हो, इसकी अभीप्सा से भरते हो और तुम्हारा रोआं रोआं पूछने लगता है 'मैं कौन हूं' तब तुम भीतर जा रहे हो, और भीतर किसी केन्द्र पर चोट होनी शुरू होगी। 'मैं कौन हूं' ऐसा प्रश्न है जो तुमने पूछा ही नहीं है कभी। इसलिए तुम्हारे किसी ज्ञात सक्रिय केंद्र पर उसकी चोट नहीं होने वाली है। तुमने कभी पूछा ही नहीं है उसे, उसकी अभीप्सा ही कभी तुमने नहीं की है। तुमने अक्सर पूछा है वह कौन है, यह कौन है? तुमने यह सारे प्रश्न पूछे हैं। लेकिन 'मैं कौन हूं' यह अनपूछा प्रश्न है। यह तुम्हारे बिल्कुल अज्ञात केन्द्र पर चोट करेगा जिस पर तुमने कभी चोट नहीं की है। और वह अज्ञात केन्द्र जहां 'मैं कौन हूं' चोट करेगा बहुत बेसिक (आधारभूत) है। क्योंकि यह प्रश्न बहुत बेसिक है, बहुत आधारभूत प्रश्न है कि 'मैं कौन हूं?' बहुत एक्जिसटेंशियल है यह सवाल। यह पूरे अस्तित्व की गहराई का सवाल है कि मैं हूं कौन। यह मुझे वहां ले जायेगा जहां मैं जन्मों के पहले था, यह मुझे वहां ले जायेगा जहां मैं जन्मों-जन्मों के पहले था। यह मुझे वहां ले जा सकता है जहां कि मैं आदि में था। इस प्रश्न की गहराई का कोई

हिसाब नहीं है। इसकी यात्रा बहुत गहरी है। इसलिए तुम्हारा जो मूल, गहरा से गहरा केन्द्र है कुंडलिनी का वहां इसकी तत्काल चोट होनी शुरू हो जायेगी।

श्वास फीजियोलॉजिकल (शारीरिक) चोट है और 'मैं कौन हूं' यह मेंटल, (मानसिक) चोट है। यह तुम्हारी माइंड-इनर्जी से चोट पहुंचाना है। और वह तुम्हारी बॉडी-इनर्जी से चोट पहुंचाना है। तो दो ही रास्ते हैं वहां तक चोट पहुंचाने के, तुम्हारे पास सामान्यतया। और तरकीबें भी हैं लेकिन वे जरा उलझी हुई हैं। दूसरा आदमी तुम्हें सहयोगी हो सकता है। इसलिये अगर तुम मेरे सामने करोगे तो तुम्हें चोट जल्दी पहुंच जाती है। क्योंकि तीसरी दिशा से भी चोट पहुंचनी शुरू होती है जिसका तुम्हें ख्याल नहीं है। वह एस्ट्रल (सूक्ष्म-जगत का) है। जो तुम श्वास गहरी लेते हो वह शारीरिक है और जब तुम पूछते हो 'मैं कौन हूं' तब यह मेंटल (मानसिक) है, और अगर तुम एक ऐसे व्यक्ति के पास बैठे हो जिससे कि तुम्हारे एस्ट्रल पर चोट पहुंच सके, तुम्हारे सूक्ष्म शरीर पर चोट पहुंच सके तो एक तीसरी यात्रा शुरू हो जाती है। इसलिए अगर यहां पचास लोग ध्यान करें तो तीव्रता से होगा बजाय एक के। क्योंकि पचास लोगों की तीव्र आकांक्षायें और पचास लोगों की तीव्र श्वासों का संवेदन इस कमरे को एस्ट्रल एटमॉस्फियर से भर देगा। यहां नई तरह की विद्युत किरणें चारों ओर घूमने लगेंगी। और वह भी तुम्हें चोट पहुंचाने लगेंगी।

पर तुम्हारे पास साधारणतः दो सीधे उपाय हैं। शरीर का और मन का। तो मैं कौन हूं गहरी चोट करेगा। श्वास से भी गहरी करेगा। श्वास से इसलिए हम शुरू करते हैं कि वह शरीर का है। उसे करने में ज्यादा कठिनाई नहीं है। 'मैं कौन हूं' थोड़ा कठिन है। क्योंकि मन का है। शरीर से शुरू करते हैं और जब शरीर पूरी तरह से व्हाईब्रेट (कम्पित) होने लगता है तब तुम्हारा मन भी इस योग्य हो जाता है कि पूछने लगे। पर पूछने की एक ठीक सिचुएशन (स्थिति) चाहिए। हर कभी तुम 'मैं कौन हूं' पूछोगे तो नहीं बनेगा काम। सब सवालों के लिए भी ठीक स्थितियां चाहिए, जब वे पूछी जा सकती हैं। जैसे कि जब तुम्हारा पूरा शरीर कंपने लगता है तब तुम्हें खुद ही सवाल उठता है कि यह हो क्या रहा है। यह मैं कर रहा हूं? यह मैं तो नहीं कर रहा हूं। यह सिर मैं नहीं घुमा रहा हूं। यह पैर मैं नहीं उठा रहा हूं। यह नाचना मैं नहीं कर रहा हूं, लेकिन वह हो रहा है। और अगर यह हो रहा है तो तुम्हारी जो आइडेंटिटी है, तादात्म्य है कि यह शरीर में हूं वह ढीली पड़ गई। अब तुम्हारे सामने नया सवाल उठ रहा है कि फिर मैं कौन हूं। अगर यह शरीर कर रहा है और मैं नहीं कर रहा हूं। अब एक नया सवाल है कि कर कौन रहा है। फिर तुम कौन हो अब? तो यह ठीक सिचुएशन है जब इस छेद में से तुम्हारा 'मैं कौन हूं' का प्रश्न गहरा उतर सकता है। तो उस ठीक मौके पर उसे पूछना जरूरी है। असल में हर प्रश्न का भी ठीक वक्त है। और ठीक वक्त खोजना बड़ी कीमती बात है। हर कभी पूछ लेने का सवाल नहीं है उतना बड़ा। तुम अगर यहीं बैठ कर पूछ लो कि 'मैं कौन हूं' तो यह हवा में ही घूम जायेगा। इसकी चोट कहीं नहीं होगी। क्योंकि तुम्हारे भीतर जगह चाहिए न जहां से यह प्रवेश कर जाय। रंध्र चाहिये।

इन दोनों की चोट से कुंडलिनी जगेगी और उसका जागरण जब होगा तो अनूठे अनुभव शुरू हो जायेंगे। क्योंकि उस कुंडलिनी के साथ तुम्हारे समस्त जन्मों के अनुभव जुड़े हुए हैं। जब तुम वृक्ष थे तब के भी और जब तुम मछली थे तब के भी। और जब तुम पक्षी थे तब के भी। तुम्हारे अनंत-अनंत योनियों के अनुभव उस पूरे यात्रापथ पर पड़े हुए हैं। तुम्हारी उस कुंडल शक्ति ने ही सब को आत्मसात् किया है। इसलिए बहुत तरह की घटनाएं घट सकती हैं। उन अनुभवों के साथ तादात्म्य जुड़ सकता है। किसी भी तरह की घटना घट सकती है। और बड़े सूक्ष्म अनुभव जुड़े हुए हैं, जिसका तुम्हें ख्याल नहीं है। एक वृक्ष खड़ा हुआ है बाहर। अभी हवा चली है जोर से, वर्षा हुई है। वृक्ष ने जैसा

वर्षा को जाना वैसा हम कभी न जान सकेंगे। हम वैसा ही जानेंगे जैसा हम जान सकते हैं। लेकिन कभी तुम वृक्ष भी रहे हो अपनी किसी भी जीवन-यात्रा में। और अगर कुंडलिनी उस जगह पहुंचेगी, उस अनुभूति के पास जहां वह संगृहीत है वृक्ष की अनुभूति तो तुम अचानक पाओगे कि वर्षा हो रही है और तुम वह जान रहे हो जो वृक्ष जान रहा है। तब तुम घबड़ा जाओगे कि यह क्या हो रहा है। तब सागर जो अनुभव कर रहा है वह तुम अनुभव कर पाओगे। जो हवायें अनुभव कर रही हैं वह तुम अनुभव कर पाओगे। इसलिए तुम्हारी एस्थेटिक (सौंदर्यगत) न मालूम कितनी संभावनाएं खुल जाएंगी जो तुम्हें कभी भी नहीं थीं ख्याल में।

जैसे गोगा का एक चित्र है। एक वृक्ष है, आकाश को छू रहा है। तारे नीचे रह गए हैं और वृक्ष बढ़ता ही चला जा रहा है। चांद नीचे पड़ गया है, सूरज नीचे पड़ गया है, वे छोटे-छोटे रह गए हैं और वृक्ष ऊपर बढ़ता जा रहा है। तो किसी ने कहा कि तुम पागल हो गए हो। वृक्ष कहीं ऐसे होते हैं चांद-तारे नीचे पड़ गए हैं और वृक्ष ऊपर चला जा रहा है। तो गोंगा ने कहा कि तुमने कभी वृक्ष को जाना ही नहीं है। तुमने कभी वृक्ष के भीतर नहीं देखा है। मैं उसको भीतर से जानता हूं। नहीं बढ़ पाता चांद-तारों के बाद यह बात दूसरी है। बढ़ना तो चाहता है। नहीं बढ़ पाता यह बात दूसरी है। अभीप्सा तो यही है। मजबूरी है, नही बढ़ पाता, लेकिन भीतर प्राण तो सब चांद-तारे पार करते चले जाते हैं। गोगां कहता था कि वृक्ष जो है वह पृथ्वी की आकांक्षा है आकाश को छूने की। पृथ्वी की वह डिजायर है। पृथ्वी अपने हाथ पैर बढ़ा रही है, आकाश को छूने को। तब वैसा देख पायेंगे। मगर वृक्ष जैसा देखेगा वैसा फिर भी हम नहीं देख पाएंगे। पर यह सब हम रहे हैं। इसलिए कुछ भी होगा। और जो हम हो सकते हैं उसकी भी संभावनाएं अनुभव में आनी शुरू हो जाएंगी। जो हम रहे हैं वह तो अनुभव में आएगा, जो हम हो सकते हैं कल; उसकी संभावनाएं भी आनी शुरू हो जाएंगी।

और तब कुंडलिनी के यात्रा-पथ पर प्रवेश करने के बाद हमारी कहानी व्यक्ति की कहानी नहीं है। वह समस्त चेतना की कहानी हो जाती है। अरविंद इसी भाषा में बोलते थे इसलिए बहुत साफ नहीं हो पाया मामला। तब फिर एक व्यक्ति की कहानी नहीं है वह। तब फिर कॉंशशनेश (चेतना) की कहानी है वह। तब तुम अकेले नहीं हो, तुममें अनंत हैं भीतर जो बीत गए और तुममें अनंत है आगे जो प्रगट होंगे। एक बीज जो खुलता ही जा रहा हो, मेनीफेस्ट होता चला जा रहा हो और जिसका कोई अंत नहीं दिखाई पड़ता हो। और जब इस तरह ओर-छोरहीन तुम अपने विस्तार को देखोगे, पीछे अनंत और आगे अनंत तब स्थिति और हो जाएगी। तब सब बदल जाता है। और वह सब के सब कुंडलिनी पर छिपे हैं। बहुत से रंग खुल जाएंगे जो तुमने कभी नहीं देखे हैं। असल में इतने रंग बाहर नहीं हैं जितने रंग तुम्हारे भीतर तुम्हें अनुभव में आ सकते हैं। क्योंकि वे रंग कभी तुमने जाने हैं और-और तरह से जाने हैं। जब एक चील आकाश के ऊपर मँडराती है तो रँगों को और ढंग से देखती है। हम और ढंग से देखते हैं। अभी तुम जाओगे वृक्षों के पास से तो तुम्हें सिर्फ हरे रँग दिखाई पड़ते हैं। लेकिन जब चित्रकार जाता है तो उसे हजार तरह के हरे रँग दिखाई पड़ते हैं। हरा रँग का एक रँग नहीं है। उसमें हजार शैड हैं। और कोई दो शैड एक से नहीं हैं। उनका अपना-अपना व्यक्तित्व है। हमको तो सिर्फ हरा रंग दिखाई पड़ता है। हरा रंग, बात खतम हो गई। एक मोटी धारणा है हमारी, बात खतम हो गई। हरा रंग एक रंग नहीं है। हरा रंग हजार रंग है। हर रंग में हजार रंग हैं। तो जब तुम भीतर प्रवेश करोगे तो वहां तुम्हें हजारों बारीक अनुभव होंगे।

मनुष्य जो है वह इँद्रियों की दृष्टि से बहुत कमजोर प्राणी है। सारे पशु-पक्षी बहुत शक्तिशाली हैं उनकी अनुभूति और उनके अनुभव की गहराइयां–ऊँचाइयां बहुत हैं। कमी है कि उनको सबको पकड़कर वे चेतन में विचार नहीं कर पाती हैं। लेकिन उनकी अनुभूतियां बहुत गहरी हैं। उनके संवेदन बहुत गहरे हैं। अब

जापान में एक चिड़िया है, आम चिड़िया है जो भूकम्प के चौबीस घँटे पहले गांव छोड़ देती है। बस एक चिड़िया नहीं दिखाई पड़ेगी गांव में तो समझो कि चौबीस घँटे के भीतर भूकम्प आएगा। अभी हमारे पास भी जो यँत्र हैं वे भी छः घँटे के पहले खबर नहीं दे पाते हैं। और फिर भी बहुत सुनिश्चित नहीं है वह खबर लेकिन उस चिड़िया का मामला तो सुनिश्चित हैं। और इतनी आम चिड़िया हैं कि गांव भर को पता चल जाय कि चिड़िया आज दिखाई नहीं पड़ रही हैं। तो चौबीस घँटे के भीतर भूकम्प होने वाला है। उसका मतलब है कि भूकम्प से पैदा होने वाली अति सूक्ष्म व्हाइब्रेशन्श (कम्पन्न) उस चिड़िया को किसी न किसी तल पर अनुभव होती है। वह गांव छोड़ देगी। अब तुम कभी अगर चिड़िया रहे हो तो तुम्हारी कुंडलिनी के यात्रा-पथ पर तुम्हें ऐसे व्हाइब्रेशन्श होने लगेंगे जो तुम्हें कभी नहीं हुए हैं। मगर तुम्हें कभी हुए हैं, तुम्हें पता नहीं, ख्याल में नहीं। तभी हो सकते हैं। तुम्हें ऐसे रंग दिखलाई पड़ने लगेंगे जो तुमने कभी नहीं देखे हैं।

तुम्हें ऐसी ध्वनियाँ सुनाई पड़ने लगेंगी, जिसको कबीर कहते हैं नाद। कबीर कहते हैं, अमृत बरस रहा है साधुओ, नाचो। तो साधु पूछते हैं, कहां अमृत बरस रहा है? अब वह अमृत कहीं बाहर नहीं बरस रहा है। और कबीर कहते हैं, सुना, नाद बज रहे हैं, बड़े नगाड़े बज रहे हैं। पर साधु पूछते हैं, कहां बज रहे हैं? और कबीर कहते हैं, तुम्हें सुनाई नहीं पड़ रहा है? अब वह कबीर को जो सुनाई पड़ रहा है वे नाद तुम्हें सुनाई पड़ेंगे, ध्वनियाँ सुनाई पड़ेंगी। ऐसे स्वाद आने शुरू होंगे जो तुम्हें कभी कल्पना में नहीं है कि ये स्वाद हो सकते हैं।

अनंत शक्तियां हैं चारों तरफ मनुष्य के उनका भी उपयोग किया जा सकता है उसके आध्यात्मिक विकास में। उन सब का उपयोग किया जा सकता है। लेकिन कोई माध्यम चाहिए। तुम खुद भी माध्यम बन सकते हो। लेकिन प्राथमिक रूप से माध्यम बनना खतरनाक हो सकता है। क्योंकि इतना बड़ा शक्तिपात हो सकता है कि तुम उसे न झेल पाओ। बल्कि तुम्हारे कुछ तंतु जाम, अवरुद्ध हो जायँ या टूट भी जायँ। क्योंकि शक्ति का एक व्होल्टेज है। वह तुम्हारे सहने की क्षमता के अनुकूल होना चाहिए। तो दूसरे व्यक्ति के माध्यम से तुम्हारे अनुकूल बनाने की सुविधा हो जाती है। अगर एक दूसरा व्यक्ति उन शक्तियों का तुम्हारे ऊपर अवतरण कराना चाहता है तो उस पर अवतरण हो चुका है तब ही। तब वह उतनी धारा में तुम तक पहुंचा सकता है जितनी धारा में तुम्हें जरूरत है। और इसके लिए कुछ भी नहीं करना होता है। इसके लिए सिर्फ मौजूदगी जरूरी है, बस। तब वह 'कैटेलिटिक एजेंट' की तरह काम करता है। वह कुछ करता नहीं है। इसलिए कोई अगर कहता हो कि शक्तिपात करता हूं तो गलत कहता है। कोई शक्तिपात करता नहीं है। लेकिन हां, किसी की मौजूदगी में शक्तिपात हो सकता है।

अब इधर मैं सोचता हूं, जरा साधक थोड़ी गहराई लें तो वह यहां होने लगेगा बड़े जोरों से। इसमें कोई कठिनाई नहीं है। किसी को कुछ करने की जरूरत नहीं है। वह होने लगेगा। बस तुम अचानक पाओगे कि तुम्हारे भीतर कुछ और तरह की शक्ति प्रवेश कर गई है जो कहीं बाहर से आ गई है, जो तुम्हारे भीतर से नहीं आई। तुम्हें कुंडलिनी का जब भी अनुभव होगा तो वह तुम्हारे भीतर से उठता हुआ मालूम होगा और जब तुम्हें शक्तिपात का अनुभव होगा तो वह तुम्हारे बाहर से, ऊपर से आता हुआ मालूम होगा। यह इतना ही साफ होगा जैसा कि ऊपर से आपके पानी गिरे और नीचे से पानी बढ़े। नदी में खड़े हैं और पानी बढ़ता जा रहा है। और नीचे से पानी ऊपर की तरफ आता जा रहा है। और आप डूब रहे हैं। कुंडलिनी का अनुभव सदा डूबने का होगा। नीचे से कुछ बढ़ रहा है और तुम उसमें डूबे जा रहे हो। कुछ तुम्हें घेरे ले रहा है। शक्तिपात का जब जब भी तुम्हें अनुभव होगा तो वर्षा का होगा। वह जो कबीर कह रहे हैं, अमृत बरस रहा है साधुओ। पर वे साधु पूछते हैं कि कहां बरस रहा है। वह

ऊपर से गिरने का होगा। और तुम उसमें भीगे जा रहे हो। और ये दोनों अगर एक साथ हो सकें तो गति बहुत तीव्र हो जाती है। ऊपर से वर्षा हो रही है और नीचे से नदी बढ़ी जा रही है। इधर नदी का पूर आता है, उधर वर्षा बढ़ती जा रही है। दोनों तरफ से तुम डूबे जा रहे हो और मिटे जा रहे हो। यह दोनों तरफ से हो सकता है, इसमें कोई कठिनाई नहीं है।

प्रश्न : शक्तिपात का प्रभाव अल्पकालीय होता है या दीर्घकालीय होता है? वह अतिम यात्रा तक ले जाता है या अनेक बार शक्तिपात की आवश्यकता पड़ती है?

असल बात यह है कि दीर्घकालीन प्रभाव तो तुम्हारे भीतर जो उठ रहा है उसका ही होगा। शक्तिपात जो है वह सिर्फ सहयोगी हो सकता है। मूल नहीं बन सकता है कभी भी। तुम्हारे भीतर जो हो रहा है वही मूल बनेगा। असली सम्पत्ति तो तुम्हारी वही है। शक्तिपात से तुम्हारी सम्पत्ति नहीं बढ़ेगी, शक्तिपात से तुम्हारी सम्पत्ति के बढ़ने की क्षमता बढ़ेगी। इस फर्क को ठीक से समझ लेना। शक्तिपात से तुम्हारी सम्पदा नहीं बढ़ेगी लेकिन तुम्हारी सम्पदा के बढ़ने की जो गति है, फैलाव की जो गति है वह तीव्र हो जायेगी।

इसलिए शक्तिपात तुम्हारी सम्पदा नहीं है। यह ऐसा ही है जैसा कि तुम दौड़ रहे हो और मैं एक बंदूक लेकर तुम्हारे पीछे लग गया। बंदूक लेकर लगने से मेरी बंदूक तुम्हारे दौड़ने की सम्पत्ति नहीं बनने वाली लेकिन तुम मेरी बन्दूक की वजह से तेजी से दौड़ोगे। दौड़ोगे तुम्हीं। शक्ति तुम्हारी ही लगेगी, लेकिन जो नहीं लग रही थी तुम्हारे भीतर वह भी लग जायेगी। बंदूक का इसमें कोई भी हाथ नहीं है। बंदूक में से इन्च भर शक्ति नहीं खोयेगी इसमें। बन्दूक की माप-तौल पीछे करोगे तो वह उतनी की उतनी ही रहेगी। उसमें से कुछ जाने-आने वाला नहीं है। लेकिन तुम उस बन्दूक के प्रभाव में तीव्र हो जाओगे। जहां चल रहे थे धीमें, वहां दौड़ने लगोगे। तो शक्तिपात से तुम्हारी सम्पत्ति की बढ़ने की क्षमता एकदम गतिमान हो जाती है।

एक दफा तुम्हें अनुभव हो जाए, बिजली चमक जाय एक। बिजली चमकने से तुम्हें कोई रास्ता प्रकाशित नहीं हो जाता है। हाथ में दिया नहीं बन जाता है बिजली का चमकना, सिर्फ एक झलक। लेकिन झलक बड़ी कीमत की हो जाती है। तुम्हारे पैर मजबूत हो जाते हैं, इच्छा प्रबल हो जाती है, पहुंचने की कामना तय हो जाती है, रास्ता दिखाई पड़ जाता है। रास्ता है। तुम यूं ही अंधेरे में नहीं भटक रहे हो। यह सब साफ एक बिजली की झलक में तुम्हें रास्ता दिख जाता है, दूर तुम्हें मंदिर दिख जाता है तुम्हारी मजिल का, फिर बिजली खो गई फिर गुप्प अंधेरा हो गया। लेकिन अब तुम दूसरे आदमी हो। वहीं खड़े हो जहां थे, लेकिन दौड़ तुम्हारी बढ़ जाएगी। मंजिल पास है, रास्ता साफ है। न भी दिखाई पड़ता हो अंधेरे में तो भी है। अब तुम आश्वस्त होते हो। तुम्हारा आश्वासन बढ़ जाता है। तुम्हारे आश्वासन का बढ़ना तुम्हारे संकल्प को बढ़ाता है।

तो शक्तिपात के इन-डारेक्ट (अप्रत्यक्ष) परिणाम हैं और इसलिए बार बार जरूरत पड़ती है। एक बार से हल नहीं होता है। बिजली दुबारा चमक जाय तो और फायदा होगा, बिजली तिबारा चमक जाय तो और फायदा होगा। पहली बार कुछ चूक गया होगा, न दिखाई पड़ा होगा, दूसरी बार दिख जाय, तीसरी बार दिख जाय। और इतना तो है कि आश्वासन गहरा होता जायेगा। तो शक्तिपात से अन्तिम परिणाम हल नहीं होगा। अंतिम परिणाम तक तुम्हें पहुंचना है।

शक्तिपात के बिना भी पहुंच सकोगे। थोड़ी देर अबेर होगी। इससे ज्यादा कुछ होना नहीं है। थोड़ी देर अबेर होगी। अंधेरे में आश्वासन कम होगा, चलने में ज्यादा हिम्मत जुटानी पड़ेगी। भय पकड़ेगा, संकल्प विकल्प पकड़ेंगे कि पता नहीं रहता है या नहीं। यह सब

होगा । लेकिन फिर भी पहुंच जाओगे । लेकिन शक्तिपात सहयोगी बन सकता है।

इधर मैं चाहता ही हूं कि तुम्हारी जरा गति बढ़े तो एकात दो पर क्या इकट्ठा सामूहिक शक्तिपात घटित हो सकता है। एक दो पर क्या करना ? इकट्ठा दस हजार लोगों को खड़ा करके शक्तिपात हो, इसमें कोई कठिनाई भी नहीं है । क्योंकि जितना आप पर होने में वक्त लगता है उतना ही दस हजार लोगों पर होने में लगेगा । । इससे कोई फर्क नहीं पड़ता ।

प्रश्न—यदि माध्यम से सम्बन्ध न हो तो क्या । इसका प्रभाव घटते-घटते मिट जाता है पूरा ?

कम तो होगा ही । सब प्रभाव क्षीण होने वाले होते हैं । असल में प्रभाव का मतलब ही यह है कि जो बाहर से आया । वह क्षीण हो जायेगा । जो भीतर से आया वह क्षीण नहीं होगा । वह तुम्हारा अपना है । प्रभाव तो सब घटने वाले हैं । वह घट जाते हैं । लेकिन जो तुम्हारे भीतर से आता है वह नहीं घटता है । उस प्रभाव में भी जो आ जाता है वह भी नहीं घटता है । वह तो बना रह जाताहै । तुम्हारी मूल सम्पत्ति नहीं घटती है । प्रभाव तो घट जाता है ।

प्रश्न—क्या बुरी संगति करने से हमारी मूल सम्पत्ति भी नहीं घट जायेगी ? क्या हम अपनी स्थिति से भी नीचे नहीं चले जायेंगे ?

नहीं, नीचे की तरफ जाने का कोई उपाय नहीं है । इस बात को भी ठीक से समझ लेना चाहिये । यह बड़े मजे की बात है कि नीचे की तरफ जाने का कोई उपाय नहीं है । तुम जहां तक गए हो, तुम्हें उससे ऊंचा ले जाने में तो सहायता पहुंचाई जा सकती हैं । तुम्हें वहीं तक ठहराए रखने की भी बाधा डाली जा सकती है । तुम्हें उससे नीचे नहीं ले जाया जा सकता है । उसका कारण है कि ऊंचे जाने में तुम बदल गए हो तत्काल··· एक इन्च भी कोई व्यक्तित्व में ऊपर गया कि पीछे नहीं लौट सकता है । पीछे लौटना असम्भव है ।

यह मामला ऐसा ही है कि किसी बच्चे को हम पहली कक्षा से दूसरी में प्रवेश करवा सकते हैं । एक ट्यूटर रख सकते हैं जो उसे पहली में पढ़ाने में सहायता दे दें और दूसरी में पहुंचा दे । लेकिन ऐसा ट्यूटर खोजना बहुत मुश्किल है जो पहली में इसने पढ़ा है उसको भुला दे और एक बच्चा दूसरी कक्षा में जाकर ना समझ लड़कों की सौबत करे तो इतना ही हो सकता है कि दूसरी में फेल होता रहे । लेकिन पहली में उतार देंगे नासमझ लड़के, ऐसा नहीं है उपाय यह हो सकता है कि वह दूसरी में ही रुक जाय और जनम भर दूसरी में रुका रहे, तीसरी में न जा सके लेकिन दूसरी से नीचे उतारने का कोई उपाय नहीं है । वह वहां अटक जायेगा ।

आध्यात्मिक जीवन में कोई पीछे लौटना नहीं होता, सदा आगे जाना है या रुक जाना है । बस रुक जाना ही पीछे लौट जाने का मतलब रखता है । तो रोक तो सकते हैं साथी, हटा नहीं सकते पीछे, हटाने का कोई उपाय नहीं है ।

प्रश्न : क्या शक्तिपात और ग्रेस (प्रभु-कृपा) में फर्क है ?

बहुत फर्क है । शक्तिपात और प्रसाद में बहुत फर्क है । शक्तिपात जो है वह एक टेकनीक है और आयोजित है । उसकी आयोजना करनी पड़ेगी । हर कभी और हर कहीं नहीं हो जायेगा । साधक इस स्थिति में होना चाहिए कि उस पर हो सके । मीडियम इस स्थिति में होना चाहिए कि वह माध्यम बन सके । जब ये दोनों बातें व्यवस्थित हों, तालमेल खा जायें, क्षण के बिंदु पर दोनों का मेल हो जाय तो हो जायेगा । यह टेकनीक की बात है । ग्रेस जो है वह अन-काल्ड फाल (अनपेक्षित-अवतरण) है । उसके लिए कभी कोई बुलावा

नहीं है । उसके लिए कभी कोई इन्तजाम नहीं है । वह कभी होती है । यानी फर्क इतना ही है, जैसे कि हम बटन दबाकर बिजली जलाते हैं और आकाश की बिजली चमकती है । वैसा ही फर्क है । यह टेकनीक है । यह वही बिजली है जो आकाश में चमकती है लेकिन यह टेकनीक से बँधी हुई है । हम बटन दबाते हैं जलती है, बटन ऊपर करते हैं बुझती है । आकाश की बिजली हमारे हाथ में नहीं है ।

ग्रेस जो है वह आकाश की बिजली है । कभी किसी क्षण में चमकती है और तुम भी अगर उस मौके पर उस हालत में हुए तो घटना घट जाती है । लेकिन वह शक्तिपात नहीं है फिर । है वही घटना जो वह ग्रेस है । उसमें मीडियम भी नहीं होता है । उसमें कोई मीडिएटर भी नहीं है बीच में । वह सीधे तुम पर होगी । और आकस्मिक और सदा सडन (अचानक) उसकी आयोजना नहीं की जा सकती है । शक्तिपात को आयोजित किया जा सकता है कि कल पाँच बजे आ जाओ, इतनी तैयारी, इतनी व्यवस्था करके आ जाना हो जायेगा । लेकिन ग्रेस के लिए पांच बजे आकर बैठने से कुछ मतलब नहीं होगा । हो जाय हो जाय, न हो, न हो । उसे हम अपने हाथ में नहीं ले सकते हैं । घटना वही है, लेकिन इतना फर्क है ।

प्रश्न : शक्तिपात अहं-शून्य, इगो-लेस स्थिति में होती है तो उसकी आयोजना कैसे संभव होगी ?

इगोलेस स्थिति में आयोजना हो सकती है । इगो का आयोजना से कोई सम्बन्ध नहीं होता है । उससे कोई सम्बन्ध नहीं है । इगोलेस आयोजना बिल्कुल हो सकती है । इगो तो बात ही और है जैसा कि हमने तय किया कि पांच बजे इस-इस तैयारी में बैठेंगे हम सब । इसमें साधक की ओर इगोलेस होने का सवाल नहीं है । इसमें मीडियम जो बनने वाला है उसके इगोलेस होने का सवाल है । और इगोलेस होने का मामला ऐसा नहीं है कि कभी तुम हो सकते हो और कभी न हो जाओ । हो गए तो हो गये (हमेशा के लिए), नहीं हुए तो नहीं हुए । अगर मैं इगोलेस हूं तो हूं और नहीं हूं तो नहीं हूं । ऐसा नहीं है कि कल पांच बजे इगोलेस हो जाऊंगा । (हंसी)···कोई उपाय नहीं है । अगर मैं अभी हूं तो कल पांच बजे भी रहूंगा, चाहे कोई आयोजन करूं या चाहे न करूं । चाहे तुम पांच बजे आओ तो और न आओ तो । मैं जागूं तो और सोऊं तो । अगर हूं तो हूं । नहीं हूं तो नहीं हूं ।

असल में हमारा जो सारा सोचना विचारना है वह डिगरीज का होता है । वह ऐसा है कि ९८ डिग्री पर बुखार है तो हम कहते हैं कि बिल्कुल ठीक है यह आदमी और ९९ डिग्री पर बुखार होगा तो हम कहते हैं कि बुखार है । ९८ डिग्री भी बुखार है, लेकिन वह नारमल (सामान्य) बुखार है । ९९ डिग्री में वह एब-नारमल हो जाता है । फिर ९८ हो जाता है तो हम कहते हैं, बिल्कुल ठीक है नारमल हो गया है । अभी भी बुखार है । मतलब इतना बुखार है जितना सबको है । सबसे जरा इधर-उधर होता है तो गड़बड़ हो जाता है । वैसे ही हमारे इगो का मामला है । वह हमारा बुखार है, उतनी ही डिग्री में है जितना हम सबको है । तब तक हम कहते हैं कि आदमी बिल्कुल विनम्र है, अच्छा आदमी है । जरा हमसे डिग्री ९९ हुई और हमने कहाकि बहुत इगोइस्ट, अहंकारी आदमी मालूम होता है । जरा ९७ हुआ कि हमने कहाकि बिल्कुल महात्मा विनम्र हो गया है । (हंसी···) ।

इगो और नो-इगो बिल्कुल ही अलग बातें हैं । उनका कोई डिग्री से सम्बन्ध नहीं है । बुखार और बुखार का न होना यह ९८ और ९९ डिग्री का मामला नहीं है । सिर्फ मरे हुए आदमी को हम कह सकते हैं कि बुखार नहीं है । क्योंकि जब तक भी गर्मी है, बुखार है ही, नारमल और एब-नारमल का फर्क है । इसलिए तकलीफ अनुभव होती है । और फिर ऐसा है ना कि अगर किसी आदमी की इगो हमारी इगो को चोट पहुंचाती है तो वह इगोइस्ट है । अगर किसी की

इगो हमारी इगो को रस पहुंचाती है तो वह आदमी इगोलेस है।

हम नापें कैसे ? पता कैसे चले ? एक आदमी मेरे पास आए और अकड़ भी मुझ पर दिखलाए हम कहते हैं कि इगोइस्ट है। आए और पैर छुए, हम कहते हैं कि बहुत विनम्र हैं । (लोगों का हंसना···) और उपाय क्या है जांच का ? हमारी इगो जांच का उपाय है। उससे हम जांचते हैं कि यह आदमी हमारी इगो को गड़बड़ तो नहीं कर रहा है, गड़बड़ कर रहा है तो इगोइस्ट है। और अगर फुसलारहाहै और कह रहा है आप बहुत बड़े महात्मा हैं तो यह आदमी विनम्र है। इसमें अहंकार बिल्कुल भी नहीं है। मगर ये सब अहंकार है या नहीं है यह हमारा अहंकार ही इन सबका तोल है। इनके पीछे जो मेजरमेंट है हमारा वह हमारा अहंकार है।

इसलिए जो नान-इगो की स्थिति है, उसको तो हम पहचान ही नहीं पाते हैं । क्योंकि उसे हम कैसे पहचानें ? हम डिग्री तक पहचान पाते हैं कि कितनी डिग्री है। लेकिन यदि डिग्री है ही नहीं तब हम बहुत कठिनाई में पड़ जाते हैं। मगर वह जो घटना है शक्तिपात की उसमें मीडियम तो इगोलेस चाहिए ही। इगोलेस कहना ठीक नहीं है । नो-इगो वाला मीडियम चाहिए ।

ऐसे आदमी को चौबीस घंटे ग्रेस बरसती रहती है यह ख्याल में रख लेना । वह तो तुम्हारे लिए आयोजन कर देगा लेकिन उस पर तो चौबीस घंटा अमृत बरस रहा है इसलिए तुम्हारे लिए भी आयोजन कर देगा कि तुम जरा एक क्षण के लिए द्वार खोलकर खड़े रह जाना, उसको तो बरसता ही है। शायद दो चार बूंद तुम्हारे द्वार के भीतर भी पड़ जायं ।

प्रश्न : यह जो डायरेक्ट ग्रेस मिलता है इसका प्रभाव क्या स्थाई होता है ? और यह क्या उपलब्धि तक ले जाता है ?

डायरेक्ट (सीधा) ग्रेस तो मिलता ही उपलब्धि पर है ना । इसके पहले तो मिलता ही नहीं है। वह तो जब तुम्हारा अहंकार जाएगा तब ही ग्रेस उतरता है नीचे । अहंकार ही बाधा है । उपलब्धि वह स्थिति है कि जिसके आगे फिर उपलब्ध करने को कुछ भी शेष न रह जाय ।

प्रश्न : कुंडलिनी साधना साइकिक (मनोगत) है या स्पिरीचुअल (आध्यात्मिक) है ?

···तुम यह जानते हो कि खाना शारीरिक है। लेकिन न खाने से आत्मा का बहुत जल्दी विलोप हो जायेगा। यद्यपि खाना शरीर को जाता है लेकिन शरीर एक स्थिति में हो तो आत्मा उसमें बनी रहती है तो कुंडलिनी जो है वह मानसिक है। लेकिन कुण्डलिनी एक स्थिति में हो तो आत्मा तक गति होती है। दूसरी स्थिति में हो तो आत्मा तक गति होती नहीं है। तो साइकिक है, लेकिन स्टेप (द्वार) बनती है स्पिरीचुअल (आध्यात्मिक) के लिए। स्पिरीचुअल नहीं है खुद। अगर कोई कहता है कि कुण्डलिनी स्पिरीचुअल है तो गलत कहता है। कोई अगर कहता है कि खाना स्पिरीचुअल है तो गलत कहता है, खाना तो फिजिकल (शारीरिक) ही है। लेकिन फिर भी आधार बनता है आध्यात्मिक के लिए। श्वास भी भौतिक है और विचार भौतिक है। सब भौतिक है। इनका जो सूक्ष्मतम रूप है उसे हम साइकिक कह रहे हैं। वह भूत का सूक्ष्मतम रूप है। लेकिन यह सब आधार बनते हैं। उस अभौतिक में छलांग लगाने के लिए ये जम्पिंग बोट्स बनते हैं । जैसे कोई आदमी नदी में छलांग लगा रहा है तो किनारे पर एक बोट पर खड़े होकर छलांग लगा रहा है। बोट नदी नहीं है। अब कोई तर्क कर सकता है कि बोट नदी है नहीं और तुम्हें नदी में छलांग लगानी है तो बोट पर किसलिए खड़े हो ? नदी में छलांग लगानी है तो नदी में खड़े होओ। नदी में कभी कोई खड़ा हुआ है ?खड़ा तो बोट में ही होना पड़ता है। छलांग नदी में लगती है। और बोट बिल्कुल अलग चीज है। वह नदी नहीं है।

तो तुम्हें जो छलांग लगानी है वह शरीर से लगानी है, मन से लगानी है । लगानी है उसमें जो आत्मा है । वह तो जब लग जायेगी तब मिलेगी । अभी तो तुम जहां खड़े हो वहीं से तैयारी करनी पड़ेगी । तो शरीर से और मन से ही कूदना पड़ेगा। और इसलिए यहीं काम करना पड़ेगा । हां, जब छलांग लग जायेगी तब तुम जहां पहुंचोगे वह होगा स्पिरीचुअल, वह होगा आध्यात्मिक ।

प्रश्न : पहले आप जो साधना की बातें करते थे उसमें आप साधक को शांत, शिथिल, मौन, सजग और साक्षी होने के लिए कहते थे । अब आप तीव्र श्वास और मैं कौन हूं पूछने के अन्तर्गत साधक को पूरी शक्ति लगाकर प्रयत्न करने के लिए कहते हैं । पहली साधना करने वाला साधक जब दूसरे ढंग के प्रयोग में जाता है तो थोड़ी देर के बाद उससे प्रयास करना छूट जाता है तो उसके लिए कौनसी विधि अच्छी है ?

अच्छे और बुरे का सवाल नहीं है यहां । तुम्हें जिससे ज्यादा शांति और गति मिलती हो उसकी फिक्र करो । क्योंकि सबके लिए अलग अलग होगा । कुछ लोग हैं जो दौड़कर गिर जायें तो ही विश्राम कर सकते हैं। कुछ लोग हैं जो अभी विश्राम कर सकते हैं। ऐसे बहुत कम लोग हैं। एकदम सीधा मौन में जाना कठिन है मामला । यह थोड़े से लोगों के लिए संभव है । अधिक लोगों के लिए तो पहले दौड़ जरूरी है । तनाव जरूरी है । मतलब एक ही है । अन्त में प्रयोजन एक ही है ।

प्रश्न : आपने तीव्र श्वास वाले प्रयोग के सम्बन्ध में कहा है कि यह अतियों से परिवर्तन की विधि है। इसमें हमें तनाव की चरम सीमा तक जाना है ताकि विश्राम की चरम स्थिति उपलब्ध हो सके। तो क्या कुंडलिनी साधना तनाव की साधना है ?

बिलकुल तनाव की साधना है । असल में शक्ति की कोई भी साधना तनाव की ही साधना होगी । शक्ति का मतलब ही तनाव है । जहां तनाव है वहीं शक्ति पैदा होती है । जैसे हमने एटम से इतनी बड़ी शक्ति पैदा करली क्योंकि हमने सूक्ष्मतम अणुओं को भी तनाव में डाल दिया, दो हिस्से तोड़ दिए और दोनों को टेंशन में लड़ा दिया । तो शक्ति की समस्त साधना जो है वह तनाव की है । अगर हम ठीक से समझें तो तनाव ही शक्ति है । टेंशन जो है वही शक्ति है ।

प्रश्न : साधना की दो पद्धतियां आप कहते हैं। पाजीटिव और निगेटिव, विधायक और निषेधात्मक। कुण्डलिनी साधना पाजीटिव है या निगेटिव ?

पाजीटिव है । बिलकुल पाजीटिव है ।

प्रश्न : बुद्ध ने कुण्डलिनी और चक्रों की बात क्यों नहीं की है ?

असल में बुद्ध ने जितनी बातें कीं हैं वह सब रिकार्डेड नहीं हैं। बड़ा प्राबलम जो है वह यही है । बुद्ध ने जो कहा है उसमें से बहुत सा जानकर रिकार्डेड नहीं है । और बुद्ध ने जो कहा है वह उनके मरने के पांच सौ वर्ष बाद रिकार्ड हुआ है । उस वक्त तो रिकार्ड ही नहीं हुआ था । पांच सौ वर्ष तक तो जिन भिक्षुओं के पास वह ज्ञान था उन्होंने उसे रिकार्ड करने से इन्कार किया । पांच सौ वर्ष बाद एक ऐसी घड़ी आ गई कि वे भिक्षु लोप होने लगे जिनको बातें पता थीं । और तब एक बड़ा संघ बुलाया गया और उसमें यह तय किया गया कि अब तो यह मुश्किल है, अगर ये दस-पांच भिक्षु हमारे और खो गए तो वह ज्ञान की सारी सम्पदा खो जायेगी। इसलिए उसे रिकार्ड कर लेना चाहिए । जब तक उसे स्मरण रखा जा सकता था तब तक जिद्‌पूर्वक उसे नहीं लिखा गया । ऐसा जीसस के साथ भी हुआ और महावीर के साथ भी हुआ । यह जरूरी था ।

उसके कारण हैं बहुत । क्योंकि ये लोग बोल रहे थे सिर्फ । इस बोलने में बहुत सी बातें थीं जो बहुत से

तल के साधकों के लिये कही गयी थीं और पहले तल के साधक के लिए वे सारी बातें जरूरी रूप से सहयोगी नहीं थीं। वे नुकसान भी पहुंचातीं। अक्सर ऐसा होता है कि जिस सीढ़ी पर हम खड़े नहीं हैं उसकी बातचीत हमें उस सीढ़ी पर भी ठीक से खड़ा नहीं रहने देती जहां हमें खड़ा होना है, जहां हम खड़े हैं। आगे की सीढ़ियां अक्सर हमें आगे की सीढ़ियों पर जाने का ख्याल दे देती हैं और हम पहली सीढ़ी पर खड़े ही नहीं हैं। और भी कठिनाई है कि पहली सीढ़ी पर बहुत सी ऐसी बातें हैं जो दूसरी सीढ़ी पर जाकर गलत हो जाती हैं। अगर आपको दूसरी सीढ़ी की बात पहले से ही पता चल जाय तो आपको वह पहली ही सीढ़ी पर गलत मालूम होने लगेगी। तब आप पहली सीढ़ी से कभी भी पार न हो सकेंगे। पहली सीढ़ी पर तो उनका सही होना जरूरी है। तभी आप पहली सीढ़ी पार कर सकेंगे।

हम छोटे बच्चे को पढ़ाते हैं 'ग' गणेश का। अब इसका कोई मतलब नहीं है, 'ग' गधे का भी होता है और गधा और गणेश में कोई सम्बन्ध नहीं है। (हंसी…) कोई भाई-चारा नहीं है, 'ग' का कोई सम्बन्ध ही नहीं है किसी से। लेकिन यह पहली क्लास के लड़के को बताना खतरनाक होगा। जब वह पढ़ रहा है 'ग' गणेश का तब उसका बाप कहे, नालायक 'ग' से गणेश का कोई संबंध नहीं है। 'ग' तो और हजार चीजों का भी है। गणेश से क्या लेना देना है ? तो यह लड़का 'ग' को ही नहीं पकड़ पायेगा। अभी उसको 'ग' गणेश का, इतना ही पकड़ लेना उचित है। अभी हजार चीजें भी 'ग' में आ जाय तो काफी है। कल और हजार चीजें भी आ जायेंगी। और हजार चीजें आ जायेंगी तो यह खुद जान लेगा कि ठीक है, 'ग' से गणेश की कोई अनिवार्यता नहीं है। वह भी एक सम्बन्ध था और भी बहुत से सम्बन्ध हैं। फिर यह जब 'ग' पढ़ेगा हमेशा तो 'ग' गणेश का, ऐसा नहीं पढ़ेगा गणेश छूट जायेंगे और 'ग' रह जायेगा।

तो हजार बातें हैं हजार तल की हैं और फिर कुछ बातें तो निजी और सीक्रेट हैं। जैसे मैं भी जिस ध्यान की बात कर रहा हूं यह बिल्कुल ऐसी बात है जो सामूहिक की जा सकती है। बहुत बातें हैं जो मैं समूह में नहीं कर सकता हूं, नहीं करूंगा। वह तो तभी करूंगा जब मुझे समूह में से कुछ लोग मिल जायेंगे जिनको कि ये बातें कही जा सकती हैं।

तो बुद्ध ने तो कहा है बहुत। वह सब रिकार्डेड नहीं है। मैं भी जो कहूंगा वह सब रिकार्डेड नहीं हो सकता है। क्योंकि मैं वही कहूंगा जो रिकार्ड हो सकता है। सामने तो वही कहूंगा। (हंसी……) जो रिकार्ड नहीं हो सकता है, वह सामने नहीं कहूंगा। उसे तो स्मृति में ही रखना पड़ेगा।

प्रश्न : तो क्या कुण्डलिनी और चक्रों की बातों को रिकार्ड नहीं किया जाना चाहिए ? क्या उन्हें गुप्त रखना चाहिए ?

नहीं, नहीं। उसमें और बहुत सी बातें हैं ना। जो मैंने कहा है इसे रिकार्ड करने में तो कोई कठिनाई नहीं है। पर उसमें और बहुत बातें हैं। मेरी कठिनाई यह है ना कि बुद्ध और आज में २५०० साल का फर्क पड़ा है। मनुष्य की चेतना में बहुत फर्क पड़ा है। जिस चीज को बुद्ध समझते थे कि न बताया जाय, मैं समझता हूं कि बताया जा सकता है। २५०० साल में बहुत बुनियादी फर्क पड़ गए हैं। अर्थात् बुद्ध ने जितनी चीजों को कहा कि नहीं बताया जाय मैं कहता हूं कि उनमें से बहुत कुछ बताया जा सकता हैं, आज। और जो मैं कहता हूं कि नहीं बताया जाय, २५०० साल बाद बताया जा सकेगा, बताया जा सकना चाहिए, विकास अगर होता है तो।

बुद्ध भी लौट आएं तो बहुत सी बातें बता देना चाहेंगे। बुद्ध ने तो बहुत ही समझ का काम किया। उन्होंने ११ तो प्रश्न तय कर रखे थे कि कोई पूछ न सकेगा। क्योंकि पूछो तो उन्हें कुछ न कुछ तो उत्तर देना पड़े, गलत दें उत्तर तो उचित नहीं मालूम होता और

ठीक उत्तर दें तो देना नहीं चाहिए । तो ११ प्रश्न उन्होंने अव्याख्य करके तय कर रखे थे । वह जाहिर घोषणा थी सारे गाँव में कि कोई बुद्ध से यह ११ प्रश्न न पूछे । क्योंकि बुद्ध को अड़चन मे नहीं डालना है । क्योंकि वे उनका उत्तर नहीं देंगे । न देने का कारण है । अगर दें तो नुकसान होगा और न दें तो उन्हें ऐसा लगता है कि मैं सत्य को छिपाता हूं । इसलिए यह पूछना ही मत ।

इसलिए गांव-गांव में भिक्षु ढिंढोरा पीट देते थे कि बुद्ध आते हैं, ये ११ प्रश्न मत पूछें । सुनकर उन्हें बहुत परेशानी होगी । तो वे अव्याख्य मान लिए गए । वे प्रश्न नहीं पूछे जाते थे । कभी कोई विरोधी आता और पूछ लेता तो बुद्ध उससे कहते कि रुको, कुछ दिन ठहरो, कुछ दिन साधना करो । जब इस योग्य हो जाओगे, तब मैं उत्तर दूंगा । लेकिन कभी उनके उत्तर दिए नहीं । इसलिए जैनों का, हिन्दुओं का बहुत बड़ा आरोप तो यही था कि उन्हें पता नहीं है । उनका यही आरोप था कि इन ११ प्रश्नों का वे उत्तर नहीं देते, हमारे शास्त्रों में तो हम सबका उत्तर देते हैं । इनको मालूम होता है कि पता नहीं है । लेकिन उनके शास्त्र में जो लिखा हुआ है, उतना उत्तर तो वह भी दे सकते थे । असल में असली उत्तर शास्त्र में भी नही लिखा हुआ है । और असली दिया नहीं जा सकता था ।

तो इसलिए यह सवाल नहीं उठता कि बुद्ध ने कुण्डलिनी और चक्रों पर बातें क्यों नहीं की हैं ।

●●●

स्वर्ण–नियम !

एक सम्राट अपनी प्रजा के नाम संदेश दे रहा था ।

संदेश के अंत में उसने कहा : "और हमें सदा ही स्वर्ण–नियम के अनुसार जीने का स्मरण रखना चाहिए (And let us all remember to live by the Golden Rule)"

लेकिन तभी किसी ने पूछा : "स्वर्ण–नियम अर्थात् क्या ?"

सम्राट ने कहा : "जिसके पास स्वर्ण है उसके द्वारा बनाया हुआ नियम (The one who has the gold makes the rule)

ऐसा प्रतीत होता है कि सम्राट राजनीतिज्ञ नहीं था !

सरल था, भोला था, चालाक नहीं था !

अन्यथा इतनी सत्य बात न कह पाता !

शक्ति ही अब तक नियम बनती रही है; इसीलिए तो कोई भी नियम नैतिक नहीं हो पाया है ।

स्वार्थ, शक्ति और स्वर्ण ही जहां नियम हैं, वहां कोई भी स्वर्ण–नियम नहीं हो सकता है ।

(आचार्य श्री की एक चर्चा से)

(संकलन—क्रांति)

सत्य की शिखायें :

(आचार्य श्री द्वारा अमृतसर में दिया गया एक प्रश्नोत्तर प्रवचन)

संकलन : श्री सरदारीलाल सहगल
अमृतसर

मेरे प्रिय आत्मन् !

यह बहुत सौभाग्य की बात है कि आपके सम्मुख इन महत्वपूर्ण सवालों का थोड़ा विचार हो सकेगा। यह कोई विवाद नहीं। विवाद से सत्य को पाने का कोई उपाय भी नहीं और विवादी व्यक्ति धार्मिक भी नहीं होता। यह एक चर्चा है और एक निवेदन भी।

पहला सवाल मित्रों ने पूछा है कि क्या मैं वेद को ईश्वरीय प्रेरित ज्ञान मानता हूं या नहीं ? इस संबंध में दो बातें समझ लेनी चाहिए। समस्त ज्ञान ही ईश्वरीय प्रेरित है और चूंकि समस्त ज्ञान ही ईश्वरीय प्रेरित है वेद को अलग से ईश्वरीय प्रेरित मानने का कोई कारण नहीं। जहां भी ज्ञान प्रकट हुआ है पृथ्वी पर, किसी भी कोने में और किसी भी समय में, किसी भी जाति में और किसी भी मनुष्य पर उतरा हो ज्ञान मात्र ईश्वरीय प्रेरित है। अन्यथा हम फिर ज्ञान को भी अगर हम वेद के साथ बांध दें कि वेद ईश्वरीय प्रेरित ज्ञान है तो दूसरे ज्ञानों का क्या होगा ? फिर वे ईश्वर के बिना प्रेरित हुए ? और कोई भी ऐसा ज्ञान हो सकता है जो ईश्वर के अतिरिक्त और किसी से प्रभावित हो ? क्योंकि सभी ज्ञान ईश्वरीय प्रेरित हैं। इसलिए किसी विशेष ज्ञान को मैं ईश्वरीय कहने को तैयार नहीं हूं ! लेकिन मेरा कारण ठीक से समझ लेंगे। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि वेद ईश्वरीय प्रेरित नहीं है। मैं सिर्फ इतना कह रहा हूं कि उसे विशेष रूप से ईश्वरीय प्रेरित कहने से खतरा है और खतरा यह है कि कहने से ही यह पता चलता है कि और ज्ञान ईश्वरीय प्रेरित नहीं है। फिर कुरान का क्या होगा ? फिर बाइबिल का क्या होगा ? फिर गुरु ग्रन्थ का क्या होगा ? फिर कठिनाई बढ़ती है इसलिए किसी एक ग्रन्थ के साथ ईश्वर को जोड़ना दुनिया में झगड़े का कारण बनता है और धर्म झगड़े का कारण नहीं बन सकता और बनता हो तो धर्म के पीछे अधर्म खेल रहा है यह समझना होगा। नहीं। पृथ्वी से यदि झगड़े मिटाने हों तो यह ध्यान में लेना होगा कि समस्त ज्ञान वो किसी भी रूप में प्रकट हो परमात्मा का है ! और फिर हम ऐसा मानकर चलेंगे तो विशेष विशेष ज्ञानों का आग्रह छोड़ना होगा। जैन मानता है कि तीर्थंकर से जो प्रकट हुआ है वह ईश्वरीय है। पैगम्बर से जो प्रकट हुआ है वह नहीं। बुद्ध मानता है भगवान् बुद्ध से जो प्रकट हुआ वह ईश्वरीय है लेकिन जीसस से जो प्रकट हुआ है वह ईश्वरीय नहीं। फिर इन सब आग्रहों की वजह से सारे जगत में धर्म तो पैदा नहीं हुआ सम्प्रदाय पैदा हो गए हैं। यह आग्रह सम्प्रदायों को जन्म दे जाते हैं इन आग्रहों के कारण धर्म पैदा नहीं होता। यह पृथ्वी सम्प्रदायों से भर गई है धर्म से नहीं। क्योंकि धर्म का आग्रह इतना संकुचित नहीं हो सकता। नानक के जीवन की कहानी आपको स्मरण है। गए थे वो मक्का ! पवित्र पत्थर की तरफ पैर रखकर सो गए हैं पुजारियों ने आकर कहा हटाओ पैर यहां से। तुम्हें पता नहीं कि पवित्र पत्थर की तरफ पैर करके पड़े हुए हो। फिर नानक ने कहा कि मेरे पैर वहां कर दो जहां परमात्मा न हो ? सभी पुजारी मुश्किल में पड़ गए। ऐसा ही सवाल मुझसे पूछा गया है कि क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान है ? मैं पूछता हूं कि मुझको ज्ञान बताओ जो ईश्वरीय प्रेरित न हो। कौन सा ज्ञान ईश्वरीय प्रेरित नहीं है ? आदमी में, ईश्वर के अतिरिक्त और कोई प्रेरणा का स्रोत नहीं है। सारी धाराएं वहीं से जन्मती हैं और वहीं से लौट जाती हैं। सभी वेद वहीं पैदा होते हैं, सब कुरान वहीं पैदा होते हैं, सब बाईबिल

वहीं पैदा होते हैं। लेकिन इस आधार पर ठेके खड़े नहीं हो सकते। इस आधार पर मन्दिर मस्जिद को लड़ाया नहीं जा सकता, इस आधार पर दुकानें नहीं हो सकतीं, इस आधार पर दुकानें कैसे चलें? इस आधार पर मन्दिर मस्जिद को कैसे लड़ायें? इस आधार पर कुरान, बाईबल और वेद में कैसा विरोध खड़ा किया जाए? यह बहुत मुश्किल हो जाता है। इसलिये हर किताब का दावेदार दावा करता है कि मेरी किताब ईश्वरीय है और दूसरे की किताबें ईश्वर की नहीं है। यह दावा अधार्मिक है। यह दावा मुझे नहीं लगता कि जानने वाले लोग करते हैं। यह दावा मुझे नहीं लगता कि जिनकी कोई अनुभूति है परमात्मा की दिशा में उनसे आता है। यह दावा उनसे आता है जिनके भीतर स्वार्थ हैं और सारे जगत में धर्म के इर्द-गिर्द बहुत स्वार्थ इकट्ठे हो गए हैं।

मैंने सुना है कि एक दिन शैतान ने जाकर अपनी पत्नी से कहा कि अब मैं बिलकुल बेकार हो गया हूं अब मुझे कोई काम नहीं रहा। उसकी पत्नी ने कहा कि तुम और बेकार? कि तुम तो चौबीस घंटे Busy without business वाले आदमी हो। तुम्हें तो २४ घंटे काम ही काम है तुम बेकार कैसे हो गए हो? उसने कहा कि मैं सच्ची बेकार हो गया हूं। जो काम मैं किया करता था आदमियों को लड़ाने का वह काम अब धर्म गुरुओं ने करना शुरु कर दिया है मुझे कोई काम ही नहीं रहा। मैं बिलकुल ही बेकार हो गया हूं। (तालियां, वाह, वाह) आदमियों को लड़ाना हो तो यह दावे सार्थक हैं कि कौन सी किताब ईश्वर की है? कौनसी मूर्ति ईश्वर की है? कौनसा वचन ईश्वर का है? कौनसा वचन ईश्वर का नहीं? नहीं! मैं ऐसे दावे का समर्थन नहीं कर सकता। लेकिन इससे यह मतलब न लिया जाए कि मैं इसके विरोध में कह रहा हूं। जब नानक ने यह कहा कि मेरे पैर वहां कर दो जहां परमात्मा न हो। नानक ने यह नहीं कहा कि इस पत्थर में परमात्मा नहीं। ध्यान में लें कि नानक ने सिर्फ इतना कहा कि तुम्हारा यह पत्थर का आग्रह कि इसी में है परमात्मा, तो वह गलत हैं क्योंकि सभी में परमात्मा है। जब मैं यह कहता हूं कि मैं दावा नहीं करता कि वेद ईश्वरीय प्रेरणा से निकले हैं तो मेरा कहना इतना है कि सभी ज्ञान उसी ईश्वरीय प्रेरणा से निकले हैं और यह दावा गलत और असंगत है और ऐसे दावों से मनुष्य जाति का कल्याण नहीं अपकल्याण हुआ है। इसी तरह के दावे दूसरों के हैं इसी तरह वे दावे भी गलत हैं।

दूसरा सवाल उन्होंने पूछा है कि आपके अनुसार मनु स्मृति, गीता और छः शास्त्रों के ज्ञान को मानव समाज के लिये कल्याण-कारी मानते हैं कि नहीं? इस बात के सम्बन्ध में सबसे पहले यह समझ लेना चाहिए और वह यह, कि सत्य की अनुभूति शब्दों में प्रकट नहीं होती। परमात्मा की अनुभूति शब्दों में नहीं कही जा सकती। ऐसा कोई भी शब्द समर्थ नहीं जो इस विराट को प्रकट कर देता है। शब्द बहुत असमर्थ हैं। शब्द बहुत Impotent हैं। शब्द बहुत निर्वीलय है। शब्द सिर्फ आँखों का आधार है। उस विराट को नहीं प्रकट कर पाता। इसलिए उसे कोई शास्त्र ठीक से कभी प्रकट नहीं कर पाया। कोई शास्त्र उसे कभी प्रकट कर ही नहीं पाया, उसे तो जानना हो तो अनुभूति में ही जाना पड़ता है। स्वयं उतरना पड़ता है जैसे तैरने के सम्बन्ध में बहुत किताबें और चाहें तो तैरने के संबंध में सारी किताबें पढ़कर आप तैरना क्या है तो यह जान नहीं सकते। तैरने पर किताब भी लिख सकते हैं। तैरने पर PH. D. भी हो सकते हैं। लेकिन भूल से ऐसे आदमी को नदी मे धक्का मत दे देना ऐसा आदमी तैरना नहीं जानता। तैरने के सम्बन्ध में जानता है। तैरने के संबंध में जानना और तैरना जानना में जमीन आसमान का फर्क है। शास्त्र परमात्मा के सम्बन्ध में कहते हैं परमात्मा को नहीं कह पाते। (वाह, वाह, वाह) परमात्मा को जानना हो तो शास्त्रों से नहीं, शब्दों से नहीं, सिद्धान्तों से नहीं, साधना और स्व-अनुभूति के मार्ग से। इसलिए मैं यह कहना चाहूंगा कि जब तक हम शास्त्रों पर ही सोचते हैं कि मनुष्य का सारा कल्याण लिखा है तब तक हम अकल्याण में पड़ते हैं। शास्त्रों में ही सारा कल्याण टिका है यह भाव ही हमें शास्त्र के अतिरिक्त परमात्मा को

कहीं खोजने नहीं देता। यह हमें वहीं रोक देता है, यह हमें रोक देता है शब्दों पर, किताबों पर।

रविन्द्रनाथ ने एक छोटा सा संस्मरण लिखा है। लिखा है कि सौंदर्य पर एक किताब पढ़ते थे। पूनम की रात है, नाव पर बजरे के बीच बँद सौंदर्य पर एक किताब पढ़ते थे। आधी रात हो गई, किताब बन्द कर दी है, दिया जलता था फूक से बुझा दिया है, दिए को बुझाते ही खड़े होकर नाचने लगे हैं। अजीब घटना घट गई। रंध्र रंध्र से, खिड़की खिड़की से, द्वार द्वार से पूरे चांद की रोशनी भीतर आकर नाचने लग गई। रविन्द्र नाथ उसके साथ नाचने लगे। रात उन्होंने अपनी डायरी में लिखा मैं भी कैसा पागल हूं सौंदर्य बाहर खड़ा पुकार रहा था और मैं इस किताब में खोजता था कि सौंदर्य क्या है? परमात्मा २४ घंटे, प्रतिपल चारों तरफ मौजूद है लेकिन किताबों से छुटकारा हो तब न, हम उसको किताबों में ढूंढ़ रहे हैं! और वह चारों तरफ मौजूद है वह हमें दिखाई नहीं पड़ता। उस पर हमारा ख्याल ही नहीं जाता है। कोई गीता में उलझा है, कोई मनुस्मृति में कोई कुरान में, कोई बाईबिल में, आदमी जिन्दगी किताब में आंखें गड़ाये समाप्त कर देता है, और उसे यह पता ही नहीं चल पाता कि जिसे वह खोज रहे थे वह शब्दों में नहीं वह उनके दिल की धड़कनों मे मौजूद था। जिसे वे खोज रहे थे वह किताब में नहीं उन आँखों में मौजूद था जिनसे वह किताब मे खोज रहे थे वह बाहर नहीं भीतर ही हर भांति मौजूद था।

मैंने सुना है कि परमात्मा ने जगत बनाया। कहानी है। सुना है जगत बना के बड़े आनन्द में था। आदमी को बनाया और सबसे बड़ी मुश्किल में पड़ गया। आदमी को बनाकर कोई भी मुश्किल में पड़ जाये, यह हम आदमी को देखकर ही समझ सकते हैं। इतना परेशान हो गया कि उसने देवताओं को बुलाकर कहा कि मुझ आदमी से बचने के लिये कोई जगह बता दो! मैं एवरेस्ट पर छुप जाऊँ? किसी देवता ने कहा कि एवरेस्ट पर छिपने से क्या होगा, थोड़े ही दिनों में कोई तेनसिह वहां पहुंच जायेगा। परमात्मा ने कहा मैं चांद पर छिप जाऊँ? किसी देवता ने कहा कि ज्यादा दिन नही चलेगा चांद पर, जल्द ही कोई आर्मस्ट्रांग (Armstrong) चांद पर उतरने की तैयारी कर लेगा। तो परमात्मा ने कहा कि मुझे कोई जगह बताओ, मुझे आदमी से बचने का कोई उपाय बताओ। आदमी दिन रात (Que लाईन लगाये खड़ा है। अपनी-अपनी शिकायतें लिये खड़ा है। कोई कहता है आज सूरज न निकले। कोई कहता है आज पानी न गिरे। कोई कहता है आज वर्षा हो जाये। कोई कहता है आज सूरज न डूबे। बहुत मुश्किल में पड़ गया हूं। तब एक देवता ने उसके कान में कहा कि तुम एक कार्य करो, तुम आदमी के भीतर छुप जाओ। (वा, वा, जय हो, जय हो) मैंने सुना है वह राजी हो गया। अब आदमी के भीतर छिप गया है। क्योंकि वह राजी इस लिये हो गया कि उसे यह बात जच गई कि आदमी सब जगह खोजेगा। मनु स्मृति में खोजेगा, गीता में खोजेगा, वेद में खोजेगा। एक जगह नहीं खोजेगा, एक जगह छोड़ देगा, खुद को छोड़ देगा। चांद पर चला जायेगा, एक जगह छोड़ देगा, वह अपने भीतर न जायेगा।

नहीं—मैं दूसरे प्रश्न के उत्तर में आपसे कहना चाहता हूं, किताबों में कल्याण है इस बात ने हमें जीवन में कल्याण खोजने से रोका है। नहीं, जीवन में कल्याण है वह चारों तरफ मौजूद है। और यदि किताबों में भी थोड़ा बहुत कल्याण है तो वह भी सिर्फ इसलिये है कि किताब पढ़े हुये लोगों की लिखी हुई किताब नहीं है यह, उन लोगों की किताबें हैं जिन्होंने जीवन में खोजा। उनमें भी कोई कल्याण वाली बात मिल जाती है तो इस लिये नहीं कि उन लिखने वालों ने कोई और पचास किताबें पढ़कर इन्हें लिखा बल्कि उन्होंने जीवन में खोजा। लेकिन ध्यान रहे Second Hand हो गई बात। अगर कृष्ण ने जिन्दगी में परमात्मा को खोजा और गीता में कहा। तो गीता 'कारबन कापी' है। कृष्ण की अनुभूति तो जीवन से आई और फिर कृष्ण ने कहा तो Second hand हो गई। आपके पास गीता Second hand है। Ist hand नहीं हो सकती। और अब तो सेकन्ड हेन्ड भी नहीं है हजार हाथों से गुजर गई है। हजार टीकाकारों से गुजर गई है। तो क्या जरूरत, जब परमात्मा हर क्षण मिल सकता हो तो

बासा और उधार परमात्मा क्यों खोजना ? वह जब यहीं मौजूद हो तो हम कहें ठहरो, हम तुम्हें पांच हजार साल पहले कही गई गीता में खोजेंगे । वह यहां मौजूद है वह अभी मौजूद है । वह यहां पुकार रहा है कि देखो इस तरफ लेकिन हम कहेंगे रुको अभी हम गीता पढ़ रहे हैं । अभी हम गीता में कल्याण खोजेंगे । नहीं कहता हूं कि गीता में कल्याण न मिलेगा । लेकिन जिसे जीवन में नहीं मिलेगा उसे गीता में तो नहीं मिलेगा । इतने विराट जीवन में परमात्मा की बड़ी किताब जो चारों तरफ मौजूद है वृक्षों में, अकाश के तारों में, पानी के झरनों में, आदमी की आंखों में फूलों में, चारों तरफ परमात्मा हजार हजार रूपों में प्रकट होता है । जो यहां नहीं दिखाई देगा. तो आदमी के लिखे कागज के पन्नों में स्याही के धब्बों में खोज लेगा ? (वाह, वाह तालियां ही तालियां) नहीं—यह बहुत असम्भव है यह संभव नहीं है ।

मेरा आग्रह है, मेरा आग्रह यह नहीं है कि कोई जान के गीता को फेक दे । गीता बहुमूल्य है । मेरा आग्रह यह नहीं है कि कोई जाके बाईबिल को आग लगा दे । बाईबल बहुत बहुमूल्य है । लेकिन ध्यान रहे कि खोजना है प्रभु को, तो जीवन में खोजना । जिस दिन जीवन में दिखाई पड़ेगा उस दिन गीता में भी दिख जायेगा । कोई कठिनाई न होगी ! लेकिन गीता में खोज कर यदि जीवन में देखने गये तो दिखेगा नहीं बहुत कठिनाई होगी । क्योंकि शब्द का आग्रह ही सत्य से वंचित हो जाना है । शब्द बीच में खड़ा हो जाता है, पथ की दीवार बन जाता है ।

अभी मैं एक ट्रेन में सवार हुआ, एक सज्जन मेरे साथ ही सवार हुए । जैसे ही मैं चढ़ा उन्होंने मेरे पैर छुये । और कहा कि बड़ा सतसंग होगा आप महात्मा हैं बड़ा अच्छा हुआ । मैंने कहा ठीक ठीक पता तो लगा लिया होता कि मैं महात्मा हूं भी कि नहीं ? अगर नहीं हुआ महात्मा तो जो पैर छुये हैं वह वापस कैसे लेंगे । उन्होंने कहा नहीं ऐसे कैसे हो सकता है आपके कपड़े बिल्कुल महात्मा के हैं । यही तो दिक्कत है कि हम कपड़ों से महात्माओं को पहचानते हैं इसी से बहुत गड़बड़ हो गई है । और कपड़ों के अलावा कोई पहचान नहीं ? उन्होंने कहा और क्या पहचान हो सकती है ? मैंने कहा मुझे नहीं देखते हो, कपड़े देखते हो । कपड़ों को पहचानते हो मुझे नहीं पहचानते हो । उन्होने कहा कैसे पहचानूं आपको । फिर उन्होंने कहा, चलो कम से कम आप हिन्दू तो हो । मैंने कहा और मुश्किल में पड़ गये हो तुम । अगर मैं हिन्दू भी न होऊँ ? उन्होंने कहा नहीं ऐसा नहीं हो सकता । मैंने कहा अपने मन को मत समझाओ कि मैंने किसी मुसलमान के पैर नहीं छुये या किसी ईसाई के पैर नही छू लिये हैं । मन को मत समझाओ अगर मैं हिन्दू नहीं हूं, तो तुम क्या करोगे ? वह आदमी जो कह रहा था बड़ी कृपा हुई, बहुत सतसग होगा, वह आदमी अपना समान लेकर दूसरे Compartment मे चला गया । मैं उसके पीछे गया मैंने कहा सतसग तो अभी हुआ नहीं । उन्होंने कहा आप मुझे माफ करिये मेरा पीछा मत करिये । मैंने कहा हो क्या गया, हमारे तुम्हारे बीच ऐसी बाधा क्या पड़ गई ? शब्द आ गये, महात्मा आ गया । अगर मैं कह देता कि हूं तो काम चल जाता और कह देता हूं नहीं तो आदमी गया । बीच मे हिदु आ गया, अगर मैं हिन्दू होता तो ठीक था सिर्फ आदमी होना इस दुनिया में गुनाह है । इसमें हिन्दू होना ठीक, मुसलमान होनाठीक । आदमी होने के लिये यहां कोई जगह नहीं ।

शब्द बाधा बनते हैं, शास्त्र बाधा बनते हैं । किताबें दीवार बन जाती हैं । मैं नहीं कहता हूं कि किताबों मे कल्याण नहीं हो सकता है मैं इतना ही कहता हूं कि जिन्हें जीवन के परम आनन्द में कल्याण का कोई पता नहीं चलता, उन्हें किताबों में भी नहीं चल सकेगा । जिन्हें खुली रोशनी में भी पता नहीं चलता है वह कहते हैं हम अंधेरे में खोजेगें । उन्हें पता न चल सकेगा । किताब खतरनाक हो सकती है अगर जिन्दगी और हमारे बीच में आ जाए । अगर जिदगी और हमारे बीच किताब आ जाये तो दुश्मन हो सकती है । और अच्छी से अच्छी किताबों को हमने दुश्मन बना लिया । अच्छी किताबों को हमने दुश्मन बना लिया । एक छोटी सी कहानी और

मैं अपनी बात पूरी करूं। मैंने सुना है कि तीर्थंकर महावीर के पास एक युवक भिक्षु हुआ उसका नाम था गोतम। बरसों उनके पास रहने के बाद भी उसे, ज्ञान उपलब्ध नहीं हुआ। उसने एक दिन महावीर के पैर पकड़े और कहा कि अब क्या होगा? मुझे अभी तक ज्ञान उपलब्ध नहीं हुआ। तो महावीर ने कहा कि मैं तेरे और सत्य के बीच में आ गया हूं। मैं तेरे और सत्य के बीच आ गया, मुझे तू छोड़। तो उसने कहा कि मैं आपको कैसे छोड़ूं? आप परम् कल्याणकारी हैं। महावीर ने कहा नहीं मैं परम् अकल्याणकारी सिद्ध हुआ हूं। तू मेरी वाणी छोड़। मेरी वाणी तेरे और सत्य के बीच में बाधा बनी है। तूने मुझ पर विश्वास कर लिया है, इसलिए तेरी खोज रुक गई। विश्वास छोड़ मुझ पर, अपनी खोज कर। परमात्मा तक दूसरे के पैरों के साथ कोई नहीं जा सका है, अपने पैरों से ही जाना होता है। और दूसरे की आंखें लगाकर परमात्मा के दर्शन कभी नहीं हुए। अपनी आंखों के साथ उसे देख। लेकिन महावीर जैसा प्यारा आदमी गौतम कैसे छोड़ दे? अगर मैं आपको कहूं कि गीता को बीच में न लें। अगर गीता बीच में से हटा दें, बहुत कष्टपूर्ण है। गीता बड़ी प्यारी किताब है। बीच में लेने का मन होता है। उसे छाती से लगा लेने का मन होता है। यह तो ठीक है। लेकिन हमारे और जीवन के बीच में गीता आ जाये तो रुकावट है। महावीर ने उस युवक को कहा मुझे छोड़ दो लेकिन उसने न छोड़ा। जब महावीर की मृत्यु हुई तो वह गांव के बाहर गया हुआ था। लौटा, तो लोगों ने कहा महावीर की मृत्यु हो गई तो वह छाती पीट कर रोने लगा कि मेरा क्या होगा? महावीर के रहते मुझे कुछ नहीं मिला। उसने कहा कि महावीर मेरे लिए कोई सदेश छोड़ गए हैं! उन्होंने कहा हाँ महावीर एक संदेश छोड़ गए हैं। उन्होंने कहा है तूने सब छोड़ दिया अब शब्दों को पकड़ के क्यों रुक गया है? शब्द को छोड़ दे। सत्य जिसको पाना है उन्हें शब्द छोड़ना पड़ता है।

दो तीन बातें महत्वपूर्ण उठाई गई हैं। उसके सम्बन्ध में कुछ कहता हूं। एक बात जो कही गई कि मनुष्य अल्पज्ञ है। मनुष्य यदि अल्पज्ञ है तो उसकी पूर्णता का कभी भी कोई दावा स्वीकार नहीं किया जा सकता। और यह दावा किसका है कि वेद पूर्ण ज्ञान का आधार है? यह अल्पज्ञ मनुष्य का दावा है। अल्पज्ञ मनुष्य के दावे पूर्णता के नहीं होने चाहिए। वेदपूर्ण ज्ञान है या नहीं यह दावा कौन करेगा? यह आदमी दावा करेगा। वेद ईश्वरीय है या नहीं. यह दावा कौन करेगा? यह आदमी दावा करेगा। और आदमी अल्पज्ञ है। यह बड़े मजे की बात है कि धार्मिक लोग निरन्तर यह कहेंगे कि आदमी अल्पज्ञ है और दावे सदा पूर्णता से भरे होंगे। अगर आदमी अल्पज्ञ है तो दावे नहीं किए जाने चाहिए। आइंस्टीन के मरने से कोई आठ दिन पहले एक विचारक उससे मिलने गया था और आइंस्टीन से उसने कहा था कि आप धार्मिक आदमी और वैज्ञानिक में क्या फर्क करते हैं? आइंस्टीन ने जो कहा कि पहली बात तो यह कि वैज्ञानिक आदमी कभी किसी बात की पूर्णता का दावा नहीं करता और धार्मिक आदमी सदा पूर्णता के दावे करता है। और मजे की बात यह है कि धार्मिक आदमी सदा कहता है कि हम विनम्र हैं और पूर्णता के दावे सदा विनम्रता के विरोध में होते हैं। आइंस्टीन ने कहा कि वैज्ञानिक आदमी सदा यह कहता है कि जो हम जानते हैं वह अधूरा है। और धार्मिक आदमी कहता है कि हमारी किताब ईश्वर की है और ईश्वर की किताब तो अधूरी नहीं हो सकती। इसलिए जिस किताब को हमें पूर्ण सिद्ध करना होता है उसे हम ईश्वर की कहना शुरू कर देते हैं। कोई अदालत में ईश्वर को लाया ही नहीं जा सकता कि कोई कहे कि यह किताब मेरी है। जब भी आप गवाहो लायेंगे वह चाहे मनु की हो, चाहे राम की हो चाहे जीसस का हो, चाहे मोहम्मद की हो सब गवाहियां आदमियों की होगी। आदमी की गवाही पर कोई किताब परमात्मा की साबित नहीं की जा सकती। और परमात्मा को अदालत में ले आएं एक आध बार तो मामला आसान हो जाए। लेकिन उसे लाया नहीं जा सकता। लाना भी मत। क्योंकि कोई आदमी परमात्मा को अगर अदालत में ले आया तो उसके बाद फिर कभी नहीं मानेगा उसे। क्योंकि जिस को हम अदालत में खींच सकते हैं उसको फिर कौन मानेगा? तो मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यही मैं कह

रहा हूं कि चूंकि आदमी अल्पज्ञ है इसलिए कोई शास्त्र पूर्णता का दावेदार नहीं हो सकता। क्योंकि दावा कौन करेगा? दूसरी बात आपसे यह कहना चाहता हूं कि उन्होंने कहा है कि आदमी को सहारा चाहिए। तभी तो वह परमात्मा तक पहुंच सकेगा। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहूंगा कि आदमी जब तक पूर्णता से बे सहारा न हो जायेगा वह परमात्मा तक नहीं पहुंच पाएगा। (वाह, वाह, वाह) क्योंकि असल में आदमी के द्वारा पकड़े गए सब सहारे आदमी की ही ईजाद है। और जब तक कोई पूरी तरह बे सहारा नहीं Totally helpless हो रो सके और पुकार सके कि कोई सहारा नहीं, कोई रास्ता नहीं, कोई मार्ग नहीं, कहीं जाने की जगह नहीं। जिस दिन कोई इस तरह असहाय अवस्था में प्राणों की पुकार करता है तो परमात्मा के निकट एक दिन पहुंचता है। परमात्मा के निकट कोई सहारा पकड़ कर न कोई पहुंच सकता है, न पहुंचा है। एक छोटी सी घटना मुझे याद आती हैं उससे मैं समझाने की कोशिश करूं। मैंने सुना है कि कृष्ण एक दिन भोजन करने बैठे। रुकमणी ने थाली लगा दी और वह खाने लगे……। तभी बीच कृष्ण खाने को छोड़कर भागे। रुक्मणी ने कहा कि कहां जाते हैं? लेकिन वह रुके नहीं और न उत्तर दिया। दरवाजे पर ठहरे और वापिस लोट पड़े। और थाली पर बैठ गये। रुक्मणी ने कहा कि इतनी तेजी से गए आप कि जैसे कहीं आग लग गई हो और फिर द्वार से वापिस क्यों लोट पड़े? कृष्ण ने कहा कि कुछ ऐसी ही घटना घट गई थी। मेरा एक प्यारा एक राजधानी से गुजर रहा है लोग उसको पत्थर मार रहे हैं। उसके माथे से खून बह रहा है और वह चुपचाप खड़ा है। वह इतना भी नहीं कह रहा है कि हे भगवान बचाओ। इतना भी नहीं कह रहा वह चुपचाप खड़ा है। मेरा जाना जरूरी है। तो रुक्मणी ने कहा फिर आप द्वार से वापिस कैसे लौट पड़े? तो कृष्ण ने कहा कि जब मैं द्वार पर पहुंचा तो पत्थर उसने अपने हाथ में उठा लिया। अब सहारा जब उसके पास है तो मेरी कोई जरूरत नहीं। वह जब बेसहारा था, इतना भी सहारा नहीं था कि भगवान का नाम भी पुकार सके, इतना भी सहारा नहीं था कि कह सके कि भगवान बचाओ, बस असहाय खड़ा था, जो हो रहा था झेल रहा था, जरा शिकायत न थी, जरा म्लान न थी, जरा प्रार्थना न थी, इतनी बेसहाय अवस्था में मेरा जाना आवश्यक था। असल में परमात्मा दौड़ता है Virtue की तरफ, एक Virtue चाहिए भीतर। एक बेसहारेपन का शून्य चाहिए भीतर। जो आदमी भी अपने अन्दर बेसहारेपन का शून्य पैदा कर लेता है, परमात्मा उसकी तरफ दौड़े चला आता है। सहारे से कोई कभी कहीं नहीं पहुंचा है क्योंकि सब सहारे हमारी ईजाद हैं। सब सहारे हमारे बनाये हुये है। शास्त्र का सहारा हमारा लिया हुआ सहारा है। अगर मैं कहूं कि वेद भगवान की किताब है। यह मेरा कथन है, यह मेरा चुनाव है। कल मैं कहता हूं कि नहीं है तो दुनिया में मुझे कोई रोक नहीं सकता। यह मेरा चुनाव है। मैंने छोड़ दिया तो छोड़ सकता हूं, पकड़ा तो पकड़ सकता हूं। मैं कहता हूं कि यह पत्थर की मूर्ति भगवान की है कल मैं कह सकता हूं कि नहीं है तो मूर्ति मुझे रोक नहीं सकती, कोई रोक नहीं सकता। सब सहारे मेरे पकड़े हुए, मेरे बनाये हुए हैं। आदमी ने बहुत तरह के सहारे ईजाद किए हैं ताकि वह बेसहारा न हो जाये। जब तक वह बेसहारा नहीं होता परमात्मा उसको उपलब्ध नहीं हो सकता। इसलिए धार्मिक आदमी मैं उसको कहता हूं जिसके सब सहारे टूट गए हों। जिसकी सब बैशाखियां गिर गई हों। जिसके सब रास्ते खो गए हों, जिसके सब साधन मिट गए हों और वह खड़ा है अब और जिसके पास मूक प्रार्थना के सिवाय कुछ भी नहीं बचा है। शब्द भी नहीं बचे हैं। मौन प्रार्थना में Silent prayer में क्योंकि जब तक शब्द की भी प्रार्थना हैं तब तक सहारा है। इसलिए जब मुक्त ही खड़ा रह गया है इस तरह उसके भीतर भी कुछ नहीं बचा रह गया है। उस क्षण देर नहीं लगती उस दिन वह हमारे भीतर प्रवेश करके सामने खड़ा हो जाता है। इसलिए मैं कहता हूं कि सहारा नहीं, न शास्त्र का सहारा, न गायत्री का सहारा, न भजन कीर्तन का सहारा यह सब सहारे हमारे पैदा किये हैं। रोकने वाले। अगर जाना है उस तक तो इन सबको बीच में ही छोड़ जाना पड़ेगा। उस तक तो जाना है तो बीच में खड़े

होकर कह देना होगा कि मेरा कोई सहारा नहीं। अब मैं बिलकुल बेसहारा हूँ। अब अगर तू भी नहीं है तो मेरा अब बेसहारा होने के सिवाय कोई मार्ग ही नहीं। जिस दिन हम यह तय कर लें तब।

लेकिन हम तरकीबें खोज लेते हैं एक आदमी धन का सहारा खोज लेता है। एक आदमी बड़ा मकान बना करके सहारा खोजता है। एक आदमी शीर्षासन कर लेता है उसका ही सहारा खोज लेता है। एक आदमी सुबह बैठकर भजन कीर्तन कर लेता है, यह उसका सहारा है। यह सब हमारी सम्पत्तियां हैं। इनके हम दावेदार बनते हैं। हम कहते हैं कि इतना हमने भजन कीर्तन किया। मैंने इतनी बार गीता उलटा डाली। मैं इतनी बार मंदिर गया अब तक नहीं आए बड़ी देर लगा दी। मैंने सब इन्तजाम कर लिया तुम हो कहां? सहारे वाला आदमी हमेशा अहंकार से भर जाता है। क्योंकि अहंकार कहता है कहां हो तुम? मैंने करके दिखा दिया, शर्त पूरी कर दी। लेकिन जहां सहारा नहीं वहां अहंकार टूट जाता है वहां कोई अहंकार नहीं रह जाता। जहां अहंकार नहीं वहां परमात्मा का प्रवेश है।

एक बात और उन्होंने कही, उन्होंने कहा प्रमाण किसका? आधार किसका? मित्र ने कहा प्रमाण किसका आधार किसका? शास्त्र के बिना प्रमाण कैसे हुआ? शास्त्र के बिना आधार कैसे होगा? यह भी सोच लेने की बात है। परमात्मा ने हर एक को विवेक दिया, प्रत्येक को बुद्धि दी। और हम जो भी निर्णय लेते हैं वह हमारी बुद्धि उसका सारा प्रमाण और आधार होती है। और किसी की बुद्धि कभी नहीं होती। अगर मैं यह भी निर्णय लूं कि गीता जो है परम ग्रन्थ है तो यह मेरी बुद्धि का निर्णय है। अगर मैं यह कहूं कि वेद जो है परमात्मा की किताब है, यह भी मेरी बुद्धि का निर्णय है। निर्णायक सदा मैं हूं। चाहे मैं कोई भी निर्णय करूं, कोई बचाव नहीं है मुझसे। मेरे ऊपर निर्णय का कोई भी निर्णायक नहीं बिठाया जा सकता। अगर मैं बिठाऊँ तो उसका भी निर्णायक मैं हूं। अगर मैं आपके घर जाऊँ और कहूं कि मैं आपको मानता हूं। यह भी मैं अपने को ही मानता हूं क्योंकि यह मेरा निर्णय है कि मैं आपको मानता हूं। मैं अपने से बाहर जा नहीं सकता। मेरा सारा आधार, हम सबका सारा आधार है हमारा विवेक। और वह जो विवेक है भीतर, वही परमात्मा का स्रोत है। ज्ञान शास्त्र से नहीं मिलेगा इस विवेक से मिलेगा।

अब उन्होंने कहा कि कोई बता दे कि ज्ञान कभी मिला हो बिना शास्त्र से। मजा यह है कि ज्ञान जब भी मिला है बिना शास्त्र से ही मिला है शास्त्र से कभी मिला ही नहीं। क्यों? लेकिन कठिनाई होती है। कठिनाई यह होती है कि शास्त्र को हम बाहर पढ़ते हैं और ज्ञान भीतर से आता है। भाषा शास्त्र से मिलती है, अनुभूति ज्ञान से मिलती है। हां, हम जब ज्ञान को प्रकट करने जाते हैं तब शास्त्रों के शब्द उपयोगी हो जाते हैं। शास्त्रों के शब्द उपयोगी हैं अभिव्यक्ति के लिए, उपलब्धि के लिए नहीं। इसलिए बिना शास्त्र के पढ़े लोगों को भी मिल गया। कबीर क्या पढ़ा? नानक क्या पढ़े? कौन सी काशी में कौन सी डिग्री है? किसी युनिवरसिटी से पढ़े लिखे हैं? तो कबीर को तो काशी के पंडित नहीं मान सकते कि इनको ज्ञान हो सकता है? क्योंकि शास्त्र जानते हो? और अब कबीर कहते हैं कि मैं, मेरे लिए काला अक्षर, भैंस बराबर। मैं तो शास्त्र जानता नहीं। तो फिर काशी का पंडित कहेगा कि तुम्हें ज्ञान नहीं हो सकता। क्योंकि ज्ञान तो शास्त्र से होता है। मोहम्मद बेपढ़े लिखे, जीसस बेपढ़े लिखे। दुनिया में उन लोगों को भी झलक मिली है जो नहीं पढ़े लिखे। ध्यान रहे! परमात्मा तक पढ़े लिखे लोगों की पहुंच ही नहीं।

परमात्मा डिग्री नहीं पूछता है पहले। कौनसी डिग्री है? कौन से शास्त्र के शास्त्री हो! कितने वेद के ज्ञाता हो! किस-किस ग्रन्थ को जानते हो! कौन-कौन सी उपाधि लाए हो! किस-किस विद्यालय का सार्टीफिकेट लाए! भूल से सार्टीफिकेट का भरोसा न रखना। परमात्मा के दरवाजे पर सार्टीफिकेट न चलेगा। कोरा हृदय काम दे जायेगा। सार्टीफिकेट भरा हृदय काम न आएगा। (वाह, वाह) (तालियाँ) वहां अक्सर वे लोग पहुंच जाते हैं, जो कहते हैं कि हम कुछ भी नहीं जानते

और वे अटक जाते हैं, जो कहते हैं कि हम जानते हैं ।

असल में हम जानते हैं कि यह भाव ही अहंकार का है । उस तक जिसे जाना है उसे यही जानना होता है कि क्या जानते हैं ? कुछ भी तो नहीं जानते । क्या पता है ?कुछ भी तो पता नहीं । इतनी विनम्रता से पहुंचता है वहां, वह पहुंच पाता है । मैं आपसे कहूंगा कि शास्त्र से तो कभी नहीं मिला है वह । एक छोटी सी घटना से समझाऊँ ।

युवानन्द ने एक संस्मरण लिखा है, लिखा हैं कि उनके गुरु थे मुक्तेश्वर । मुक्तेश्वर के पास जब युवानन्द पहली बार गये तो बीस दिन रहते थक गए । क्योंकि वह बूढ़ा जो था वह वही बातें रोज कहता कि कोई भी जवान थक जाए । युवानन्द ने सोचा कि यही एक बात रोज २ कब तक सुनूँगा ? इससे तो और कुछ मिलने को नहीं । सोचा कल सुबह छोड़ दूंगा यह जगह । उस रात ही एक सन्यासी भटकता हुआ उस आश्रम में आया । बैठक हुई सुबह, सन्यासी इकट्ठे हुए । उस यात्री सन्यासी ने दो घन्टे वेदांत की बारीक से बारीक चर्चा की । योगानन्द को लगा कि हो तो गुरु ऐसा हो । जिसके पास इतना शास्त्र है । इसके पास सत्य भी होगा । जो इतना जानता है उसके पीछे जाने से कुछ मिलेगा । और योग नंद को यह भी लगा कि बूढ़ा गरीब बैठा है मुक्तेश्वर, इसके मन को कितनी बेचैनी न हो रही होगी जो नहीं जानता । बूढ़ा बैठा था आंख को बन्द किये उसकी आंख से आंसू टकप रहे थे । योगानंद ने सोचा शायद रो रहा है कि मैं कुछ नहीं जानता । दो घन्टे में बात पूरी हुई उस यात्री सन्यासी ने आंखें ऊपर उठाईं और बूढ़े गिरी से पूछा, कैसा लगा ? मैंने जो कहा वह कैसा लगा ? गिरी ने कहा उसी के लिये तो मैं रो रहा हूं कि तुम तो कुछ कहते ही नहीं । उसने कहा मैं कुछ कहता नहीं ? यह दो घन्टे से जो बोल रहा हूं । गिरी ने कहा तुम नहीं बोल रहे । तुमसे उपनिषद् बोल रहे हैं, वेद बोल रहे हैं गीता बोल रही है (तालियां) तुम एक शब्द भी नहीं बोल रहे हो । तुम तो कुछ बोलते ही नहीं हो । मैं इसीलिये रो रहा हूं कि यह आदमी शास्त्रों में खो गया है । इस आदमी को अनुभूति की एक भी किरण न मिली । इस आदमी के पास अपना कहने जैसा कुछ भी नहीं ।

और ध्यान रहे, धर्म जब तक अपना कहने जैसा न हो तब तक समझना कि वह दो कौड़ी का है । जिसमें अपना कहने जैसी एक भी किरण हो, तो वह किरण आपके जीवन के लिये नाव बनेगी । लेकिन अपनी किरण कहां मिलेगी ? मित्र ने पूछा है कि नहीं सीखेंगे तो मिलेगी कहां से ? यह भी बात आखिर समझ लेनी जरूरी है । असल में जिन्दगी में हम सब सीखके जानते हैं । अगर गणित सीखना है तो स्कूल में सीखना पड़ता है । अगर भाषा सीखनी है तो सीखनी पड़ती है । जगत में जो हम सीखते हैं उसे सीखना पड़ता है बिना सीखे हम नहीं जानते । इसलिये हम सोचते हैं कि परमात्मा को भी सीखना पड़ेगा । यह तर्क स्वाभाविक है । जब सभी सीखने से मिलता है भूगोल, इतिहास, शास्त्र । सभी कुछ सीखना पड़ता है इसलिये परमात्मा भी सीखना पड़ेगा । यह हमारा ख्याल है । यह हमारे ख्याल में आता है । यही भूल हो जाती है । असल में सीखने से वह मिलता है जो हमें मिला हुआ नहीं है । लेकिन परमात्मा हमें मिला ही हुआ है । वह सीखने से नहीं मिलता है वह भूलने से मिलता है, ध्यान रहे सीखने से नहीं, learning से नहीं, भूलने से, unlearning से परमात्मा हमें मिला ही हुआ है । परमात्मा कोई ऐसी चीज नहीं, जो जाकर हमें पा लेनी है । वह कोई ऐसी चीज है जो हमारे भीतर मौजूद है । लेकिन हम कुछ और सीखनेमें लग गये हैं उसका हमें ख्याल भूल गया है । यह सीखना हमारा छूट जाये तो तत्काल हमें वह ख्याल में आ जाए । परमात्मा ऐसी चीज अगर होती, जिसे हमने खो दिया है तो हम किसी से पूछते भी कि कहां खो दिया है । अगर परमात्मा ऐसी कोई चीज होती कि कहीं किसी चाँद और तारों पर बैठा हो तो पता लगाना जरूरी हो जाता । तब शास्त्र और गुरु जरूरी हो जाते ।

लेकिन परमात्मा और हमारे बीच इंच भर का भी फासला नहीं। असल में यह कहना भी कि परमात्मा और हम गलत है। परमात्मा ही है; लेकिन यह हमें तब पता चले जब हमारा ध्यान सारे सीखने से भीतर जायेगा। बाहर हमने सब सीख लिया है गणित सीखा, भूगोल सीखा, भाषा सीखी, व्यापार सीखा, सब सीखा है लेकिन एक चीज भीतर कुछ अनसीखा सदा मौजूद है । उस ओर हमारा ध्यान नहीं गया है, हम सीखने में उलझे हैं उस तरफ ध्यान जायेगा नहीं। अगर वह सब सीखना एक क्षण को भी हम छोड़ सकें, तो जो भीतर अनसीखा मौजूद है वह हमें दिखाई पड़ जायेगा । परमात्मा को कभी किसी ने सीखा नहीं, नहीं तो हम स्कूल खोल देते, कालेज खोल देते। परमात्मा को भी सिखा देते । जैसे केमिस्ट्री, फिजिक्स सिखाते हैं परमात्मा को भी सिखा देते तो सारी दुनिया धार्मिक हो जाती। नहीं, परमात्मा को सिखाया ही नहीं जा सकता, क्योंकि और सब चीजें सिखाई जा सकतीं हैं। जो बाहर है परमात्मा भीतर है इसलिये नहीं सिखाया जा सकता है। जो भीतर है उसे सब सीखना छोड़के जाना जा सकता है वह Unlearning में उपलब्ध होता है। वह शास्त्र से, सिद्धांत से, वाद से, प्रतिवाद से कोई भी सम्बन्ध नहीं। तर्क से बुद्धि से उसका कोई भी सम्बन्ध नहीं। इन सबसे हम हटे तो एकदम प्रकट हो जाता है एक छोटी से घटना और मैं अपनी बात पूरी करूं।

मैंने सुना है। स्वामीराम कहा करते थे कि एक प्रेमी अपने गाँव से बाहर चला गया था उसकी प्रेयसी उसका मार्ग देखते देखते थक गई। प्रतीक्षा करते करते थक गई और फिर उसे खोजने निकली वह उसके द्वार तक पहुंच गई दूसरे गांव में। सांझ सूरज ढलता था तो उसने उसके द्वार को धकाया। द्वार ढका था वह भीतर गई। देखा उसका प्रेमी टेबल पर बैठकर कुछ लिखने में लीन था उसने सोचा बाधा न दूं। वह बैठ गई द्वार पर कि लिखना पूरा हो जाये तो मैं फिर मिल लूं। घंटा, दो घंटा, तीन घंटा आधी रात होने लगी। वह बेचैन स्त्री घबड़ा रही है वर्षों से मिली नहीं, अब मिलने को है तो वह पन्ने पर पन्ने लिखता जा रहा है। आखिर स्याही खत्म हो गई, कागज खत्म हुआ, तब उसने आंख उठाई देखकर वह हैरान हो गया, डर गया। वह इसी प्रेयसी को पत्र लिख रहा था। उसने कहा तुम यहां? उसने कहा मैं यहां बहुत देर से हूं। लेकिन तुम पत्र लिखने में इतने तल्लीन थे कि इधर देखते तो कैसे देखते? उसने कहा पागल तूने कहा क्यों नहीं? उसने कहा कि मैंने सोचा कि पता नहीं कि तुम कितने महत्वपूर्ण काम में लीन हो? रोकूं वह भी ठीक नहीं। मैंने प्रतीक्षा की। परमात्मा प्रतीक्षा कर रहा है भीतर। आप लिखने में लगे हैं। हो सकता है आप राम राम ही लिख रहे हों किताब में बैठकर! राम राम राम राम लिख रहे हों और वह भीतर बैठा देख रहा है, बेचारा चिट्ठी लिख रहा है। और पता भी मालूम नहीं कि कहाँ भेजनी है? जरा यह चूक जाये, जरा यह गीता से, कुरान से, बाईबल से छुटकारा हो। जरा भीतर आये इससे कहूं कि मैं यहां तेरी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

परमात्मा शास्त्रीय ज्ञान से नहीं मिलता है इतनी सस्ती चीज परमात्मा को मत बनायें। परमात्मा मिलता है भीतर, जब हम उठकर बाहर से भीतर चले जाते हैं। जब कोई बाहर से थक जाता है और भीतर जाता है तब मिलता है। उन्होंने कहा पहले ज्ञान होगा फिर साधना होगी न। यह ज्ञान की साधना नहीं है। यह ज्ञान की साधना नहीं है यह बाहर से थकने की बात है। बाहर से थके कि भीतर गये। भीतर गये कि वह सदा मौजूद है।

जिस दिन बुद्ध को ज्ञान हुआ लोगों ने पूछा कि क्या मिला? उन्होंने कहा यह मत पूछो कि क्या मिला। क्योंकि जो मिला ही हुआ था उसे कैसे कहूं कि मिला! उसे जाना और जाना यह नहीं कि नहीं जानता था जाना यही कि कैसा पागल था कि जो निरन्तर मौजूद था उसे मैंने कैसी तरकीब से अनजाना किये हुआ था। क्या तरकीब थी वह? हमें परमात्मा को खोजने की तरकीब नहीं चाहिये कि किस तरकीब से हम बचे हुये हैं उससे।

किस तरकीब से हम बचे हुए हैं। हमने बहुत तरकीबें ईजाद की हैं। और सबसे बड़ी तरकीब जो आदमी ने ईजाद की है वह धर्म के नाम पर लिखी गई किताबें हैं। क्यों ? क्योंकि वह सोचता है कि इनसे मिल जायेगा। इन्हीं में बैठा रह जाता है उलझा। पढ़ता रहता है पढ़ता रहता है। मैं लोगों को देखता हूं चालीस साल से पढ़ रहे हैं गीता। अभी भी पूछते हैं कि वह कहां है ? चालीस साल क्यों गवांये ? क्या करते रहें तुम ? चालीस साल में कभी भी पहुंच गये होते भीतर लेकिन वह सोचते हैं कि किताब में मिल जायेगा। वह रेत से तेल निकालने की कोशिश में लगे हैं। यह नहीं होगा ! परमात्मा भीतर सदा मौजूद है वहां ध्यान जाने की जरूरत है बाहर से ध्यान हटे तो भीतर जाये ! बाहर से पत्नी से ध्यान आसानी से हट जाता है बेटे से भी ध्यान आसानी से हट जाता है क्योंकि दुनिया में कोई कहने वाला नहीं कि बेटे से परमात्मा मिल जाता है। धन से भी ध्यान हट जाता है क्योंकि दुनिया में कोई कहने वाला नहीं कि धन से परमात्मा मिल जावेगा। धर्म ग्रन्थ से सबसे ज्यादा मुश्किल से हटता है क्योंकि लोग हैं, जो कहते हैं उससे मिल जायेगा। इसलिये सबसे ज्यादा अटकाने वाले धर्म ग्रन्थ सिद्ध होते हैं। फिर मैंने यह नहीं कहा कि धर्म ग्रन्थ मत पढ़ो मेरे मित्र जो कह रहे हैं वह पूरे वक्त यह कहते रहे कि पढ़ने से फायदा होगा। पढ़ने का मैंने विरोध किया नहीं, पढ़ें मजे से। पूरा पढ़ेंगे तब ही पता चलगा कि इसमें कुछ नहीं (तालियाँ) पढ़ें, खूब जी जान लगाकर पढ़ें। पढ़ने से पता चलेगा कि बेकार गई मेहनत अब कहीं और खोजें ! अब यहां नहीं मिलता। मैं भी कहता हूं कि खूब पढ़ें, पढ़ने का बड़ा फायदा है। एक फायदा यह है कि आदमी धर्म ग्रन्थ पढ़ने से, आदमी धर्म ग्रन्थ से मुक्त हो जाता है।(इस बीच आचार्य श्री ने स्टेज सेक्रेटरी से पूछा कि समय तो नहीं हो गया ? तो उन्होंने कहाकि अभी आधा मिनट बाकी है।

आधा मिनट और है इसकी बात भी कर लें। एक वाक्य आधा मिनट में कम से कम जरूर कहा जा सकता है। और वह यह कि ज्ञान से मत खोजना उसे। अज्ञान से खोजेंगे तो जल्दी मिल जायेगा। क्योंकि जो जान लेता है कि अज्ञानी हूं वह विनम्र हो जाता है और वह जान लेता है कि मैं ज्ञानी हूं तो अकड़ से भर जाता है। वह अकड़ ही बाधा बन जाती है। ज्ञानियों से ज्यादा अकड़ा हुआ आदमी मिलना बहुत मुश्किल है। बहुत मुश्किल है। ज्ञानियों से ज्यादा अहंकारी आदमी खोजना बहुत मुश्किल है।

अज्ञानी तो सदा विनम्र होता है, कहता है कुछ पता नहीं। ज्ञानी के पास शास्त्र होते हैं, वह कहता है कि पता है। सब पता है। और सब पता है, इसलिये वह शास्त्र का दावा करता है कि यह ईश्वरीय है। यह उनकी कमजोरी का दावा है। मन कहता हैं कि किताब अगर ईश्वरीय न हुई तो श्रद्धा करना मुश्किल हो जायेगा। इसलिये मन कहता है कि पहले सिद्ध करो कि यह ईश्वरीय है। तो फिर श्रद्धा करना आसान हो जाता है। यह अश्रद्धालु मन का लक्षण है। किसी किताब को ईश्वरीय सिद्ध करने की जरूरत नहीं हैं, किताब पढ़ो अगर उससे कुछ मिलना होगा तो बिना ईश्वरीय सिद्ध किये मिल जायेगा। नहीं मिलना होगा तो ईश्वरीय सिद्ध करने से भी मिलेगा नहीं। लेकिन हमारा मन कहता है कि पहले सिद्ध तो कर लो कि यह ईश्वरीय है। यदि ईश्वरीय सिद्ध हो जाये तो फिर श्रद्धा करना आसान हो जायेगी। बड़ा खेल खेल रहे हैं ? जैसे कुत्ता अपनी पूंछ पकड़ता है, ऐसा ही हमारा खेल है। हम ही सिद्ध करते हैं कि इश्वरीय है, हम ही विश्वास कर लेते हैं, अन्धा होने के लिये भी यह आदमी कितनी तरकीबें खोजता है।

***

(यह प्रश्नोत्तर प्रवचन आचार्य श्री ने अमृतसर में दिया। इसके बाद प्रश्नकर्त्ता जब स्वयं बोलने खड़े हुए तो उन्हें श्रोताओं ने नहीं सुना और श्रोतागण चले गए।)

विचित्र विकलता

अपनी ही मूढ़ता की अंधेरी कोठरी में बंद, जहां श्वांस लेना भी मुश्किल था, ऐसी दुर्गंध में चिल्ला रही थी मैं, कोई मुझे मुक्त करो। पुकार सुनते ही आपने बड़ी करुणा बतायी और एक ही दृष्टि में कोठरी से (कल्पनाओं की) छत अलग कर दी।

मैं बहुत प्रसन्न हुई। आकाश की रोशनी ने मेरा मन भर दिया। चाँद-तारों को छूने की जिज्ञासा जग गई, पर चारों ओर (भावनाओं की) ठोस दिवालें बाधा बनकर खड़ी थीं। आपके छूने से वे भी सारी-की-सारी गिरने लगीं। और ताजी, खुली हवायें मुझे छूने लगीं और आपके मौन संकेत पर मुक्त मन से चल पड़ी मैं। अनजान है राह।

लेकिन……अरे……अरे……। आप यह क्या कर रहे हैं अब ? अब धरती खींच रहे हो ? खींच भी ली। उड़ना तो आता नहीं, और ठहरूं तो कहां ? सिवाय गिरने के कोई उपाय ही नहीं छोड़ा। अतल खड्ड मुझे बड़ी तीव्रता से खींच रहा है। मैं अति भयभीत हूं और आप तो चल पड़े, मुझे अधर में लटका कर।

यह कैसी मुक्ति है ?

पांव टिकने को तड़फड़ाके के थक चुके हैं। बहुत टटोला थामने को, नहीं मिला कुछ तो हाथ भी यूं ही लटकते हैं, आँखें शून्य हो रही हैं।

आकाश चुप है, सब शांत है और अचानक दिशाओं में रजनीश का अटूट हास्य गूंज उठा है कि, यही है मुक्ति। और इतनी विवशता में भी पूर्ण आनंद फूट पड़ा, यह महसूस करके कि आपका जाना तो भीतर आना था। प्राणों में प्रवेश करना था।

अब यहां भी हर श्वांस में शामिल हैं आप। अब तो मुक्ति भी मुक्त हो गई है।

तथाता के चरणों में सादर
जयवंती, जूनागढ़

सूचना

अगस्त माह में प्रेस की अत्याधिक छुट्टियों के कारण हम अपना यह अंक समय पर नहीं दे सके, एतदर्थ क्षमा करेंगे।

आगे आपको 'युक्रांद' समय पर मिले, इस कारण हम आपको आगे का दूसरे वर्ष का ५ वां अंक १६ सितम्बर की तारीख का प्रेषित करेंगे।

व्यवस्थापक
युक्रांद

(मुखपृष्ठ चित्र : बंबई ध्यान साधना से)

आचार्य श्री के आगामी देश व्यापी कार्यक्रम

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम	संयोजक
१ से ७ सितम्बर ७० तक	बंबई	प्रवचन पर्यूषण व्याख्यानमाला	श्री ईश्वर बाबू, जीवन जागृति केन्द्र रूम नं. ५३, एम्पायर बिल्डिंग, डा० डी० एन० रोड, बंबई : १ फोन : २६४५३०
१० सितम्बर से १३ सितम्बर ७० तक	बड़ौदा	प्रवचन	श्री चंद्रकांत पटेल, 'आसोपालव' बैंक आफ इंडिया के सामने, रायपुरा, बड़ौदा
२० सितम्बर ७०	इन्दौर	प्रवचन	श्री राजमल जैन, ९२, जवाहर मार्ग, इन्दौर

जीवन संगीत से आलोकित : नई साज सज्जा में

ज्योति शिखा

(आचार्य श्री के विचारों की आध्यात्मिक त्रैमासिकी)

संपादक : श्री महिपाल

मूल्य । वार्षिक । ५ रु०
एक प्रति १)२५ न० पै०

प्रकाशक : जीवन जागृति केन्द्र,
रूम नं० ५३, एम्पायर बिल्डिंग
डा० डी० एन रोड, बंबई : १
फोन न. २६४५३०

आचार्य श्री का प्रकाशित साहित्य

	हिन्दी	गुजराती	मराठी
१. साधना पथ	३।००	३।००	३।००
२. क्रांति बीज	३।००	२।५०	२।५०
३. सिंहनाद	१।५०	१।२५	३।००
४. मिट्टी के दिए	३।००	३।५०	—
५. पथ के प्रदीप	३।००	३।००	८।००
६. संभोग से समाधि की ओर	३।५०	३।५०	—
७ आचार्य रजनीश समन्वय, विश्लेषण, संसिद्धि	७।५०	—	—
८. मैं कौन हूं ?	२।००	२।००	—
९ नए संकेत	२।००	१।७५	—
१०. अज्ञात की ओर	२।००	२।००	—
११. सत्य की खोज	३।००	—	—
१२. अंतर्यात्रा	३।५०	—	—
१३. शांति की खोज	२।००	—	—
१४. सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण	१।२५	१।५०	—
१५. सूर्य की ओर उड़ान	१।००	१।००	—
१६. प्रेम के पंख	०।७५	०।७५	०।७५
१७. कुछ ज्योतिर्मय क्षण	१।००	०।७५	—
१८. अमृत कण	०।६०	०।५०	०।५०
१९. अहिंसा दर्शन	०।५०	०।५०	०।५०
२०. नई दिशा, नई बात	०।३०	—	—
२१. सत्य की पहली किरण	६।००	—	—
२२. प्रभु की पगडंडिया	४।००	—	—
२३. क्रांति के बीच सबसे बड़ी दीवार	०।३०	—	—
२४. बिखरे फूल	०।३५	—	—
२५. जीवन और मृत्यु	—	१।००	—
२६. नए मनुष्य के जन्म की दिशा	०।७५	०।७५	—
२७. अस्वीकृति में उठा हाथ (भारत, गांधी और मेरी चिंता)	५।००	—	—

प्राप्ति स्थल :

[१] जीवन जागृति केन्द्र, रूम नं. ५३, एम्पायर बिल्डिंग, डा० डी. एन. रोड, बंबई : १

[२] मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–७।

[३] स्वदेशी वस्तु भंडार, जामनगर।

[४] आर. अंबानी एंड कं०, अपोजिट : जिमखाना, राजकोट।

[५] चंद्रकांत पटैल, आमोपालव, बैंक आफ इंडिया के सामने, रावपुरा, बड़ौदा।

[६] मोतीलाल बनारसी दास, नेपाली खपरा वाराणसी।

[७] मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना।

[८] भारतीय संस्कृति भवन, माई हीरांगेट जलंधर शहर।

[९] नरसिंह भाई पटैल, सहकारी मुद्रणालय, कोठारी मार्ग, सुरेंद्र नगर।

[१०] सस्तु किताब घर, पथ्थर कुवां, रिलीफ रोड, अहमदाबाद।

[११] बालगोविंद कुबेरदास, गांधी रोड, अहमदाबाद।

[१२] सर्वोदय साहित्य भंडार, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर—२

[१३] हीराभाई मेहता, पांचघर, ७०, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता : १

[१४] सुषमा साहित्य मंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर।

[१५] युनिव्हर्सल बुक सर्विस, सिटी कालेज के सामने, जबलपुर।

[१६] श्री आर. के. पुंगालिया, १०१, टिम्बर मार्केट, पूना–२

[१७] श्री महेन्द्र कुमार मानव, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर (म० प्र०)

[१८] श्री सौभाग्यचंद्र तुरखिया, २ प्रभात सोसाइटी, सुरेन्द्र नगर।

In this PDF, page 36 is missing.

PLASTICIZERS

For the

Plastics Paint & Perfumery Industries

DOP—Dioctyl Phthalate
DIOP—Di-iso octyl Phthalate
DAP—Dialphanyl Phthalate
610 P—Dialfol 610 Phthalate
DBP—Dibutyl Phthalate
DMP—Dimethyl Phthalate
DEP—Diethyl phthalate

AVAILABLE FROM

Pioneers in manufacture of Phthalate Plasticizers.

INDO-NIPPON CHEMICAL COMPANY LIMITED

Alice Building, 339, D. N. Road, Bombay - I

GRAM : PLASTICIZER
TELEX : INNIPON 011 (2081)
PHONE : 251723
252269

उत्तम तम्बाखू और कुशल कारीगरों से बनी

शेर और पहलवान छाप बिड़ी

भारत में अग्रणी है

मोहनलाल हरगोविंददास

जबलपुर म० प्र०

मानसेवी संपादक : अरविन्द कुमार। सह-संपादक : आलोक कुमार पाण्डे। व्यवस्थापक : श्री आर. आर. मिश्रा
स्वत्वाधिकारी प्रकाशक : अरविन्द कुमार, कमला नेहरू नगर, जबलपुर।
मुद्रण : श्रीपाल प्रिंटर्स, राजा गोकलदास महल, से मानसेवी संपादक अरविन्द कुमार के लिये मुद्रित
वर्ष : २ ॥ अंक : ४ ॥ १६ अगस्त १६७० ॥ मूल्य : एक प्रति : ०.६० न० पै०
॥ वार्षिक : १२ रु० ॥

WORLD FAMOUS

Kwality

ICE CREAM

a dream with cream

: MANUFACTURED BY :

Kwality Ice Cream Co.,

OF BOMBAY & NEW DELHI

90, Industrial Area-A, LUDHIANA